हिन्दी काव्य-प्रबंध—माला-पुस्तक पहिली।

छंदःसारावली

अर्थात

सरल भाषा-पिंगल

जिसमें छंदःप्रभाकर में वर्णित छन्दों के अतिरिक्त अनेक
नूतन छन्दों के नाम, नियम, यति आदि बातें
सुगमता पूर्वक संक्षिप्त रूप से सूत्रवत् एक एक
पंक्ति में ही वर्णित हैं और सूची, प्रस्तार,
नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, मर्कटी, पताका
इत्यादि के भेद भी अत्यंत
सरल रीति से
प्रदर्शित किये
गये हैं।

—रचयिता—
साहित्याचार्य्य बाबू जगन्नाथ प्रसाद भानु-कवि,
रिटायर्ड ई. ए. सी. बिलासपुर, मध्यप्रदेश।

जगन्नाथ प्रेस, बिलासपुर में मुद्रित।
सन् १९१७ ई०

[प्रथम बार ५०० प्रति]

PRINTED BY S ABDULLA MANAGER AT THE
"JAGANNATH PRESS"—BILASPUR, C P
AND
PUBLISHED BY MR B. JAGANNATH PRASAD
PROPRIETOR.

विज्ञप्ति ।

जगदीश्वर को कोटि२ धन्यवाद है कि जब से छन्दःप्रभाकर पिंगल का तृतीय संस्करण प्रकाशित हुवा है तब से भारतवर्ष में उसका और भी अधिक प्रचार बढ गया है । कई लोग यह पूछ सकते हैं कि जब ऐसी स्थिति है तब इस दूसरी पुस्तक के रचने का क्या प्रयोजन है ? उत्तर में हम उन पत्रों में से जो अनेक साहित्य परीक्षार्थियों की ओर से आये हुए हैं, एक यहां उद्धृत करते हैं :—

"भानु महोदय, छन्दःप्रभाकर मिला । यह ग्रंथ जैसा बृहद् और उपादेय है, उस हिसाब से इसका मूल्य कुछ भी अधिक नहीं । किंतु, हम जैसे शक्तिहीन विद्यार्थियों के लिये यह मूल्य भी अधिक जान पडता है, तथा परीक्षा के हेतु तैयारी करने मे इनमें दिये हुए लक्षणों के याद करने में अधिक समय और परिश्रम व्यय होता है । ....क्या आप हम लोगों के हितार्थ इसी विषय पर एक छोटी सी पुस्तक रचने की दया न दिखावेंगे, जिसमे छंदों के लक्षण, उदाहरण आदि सारी बातें संक्षिप्त रूप में बता दी जावें, साथ ही उसका मूल्य भी अधिक न हो" ।

बस, यह छंदःसारावली इन्हीं पत्रों का परिणाम है । इसमें अनेकानेक छंदों का समावेश है और उनके लक्षण नाम तथा उदाहरण सूत्रवत् एक एक पंक्ति मे ही लिखे गये है । अंत में गणित विभाग भी बहुत सरल कर दिया गया है । आशा है कि हिंदी साहित्य परीक्षा में विद्यार्थियों को इससे अत्यंत लाभ होगा । मूल्य भी स्वल्प ही रक्खा गया है । हां इतना अवश्य कहना होगा कि यदि गहरे जाने की इच्छा होतो छन्दःप्रभाकर अवश्य देखिये । ईश्वर ने चाहा तो इसी परिपाटी के अनुसार रस तथा अलंकारादिक के भी संक्षिप्त ग्रंथ शीघ्र प्रकाशित होंगे ।

जगन्नाथ प्रसाद,

भानु-कवि ।

भूल–सुधार

पृष्ठ	छद	सधार
२०	(पादसूचना) सुमेरु	सुमेरू
२९	२ पद्मावती	अन्य नाम–कमलावती
३३	१ हरिप्रिया	अन्य नाम–चच्चरी
५२	१३ वामा	अन्य नाम–सुखमा
५५	२४ हारिणी	२४ हरिणी
५५	२७ दोधक	अन्य नाम–बंधु
३२	५३ (साधु	५३ (साधु)
७१	८ विश्वगति	अश्वगति
८२	५ मदिरा	अन्य नाम-मालिनी, उमा, दिवा
८६	३ सुख	अन्य नाम–किशोर

पाठको से विनय है कि कृपया, पढ़ने के पूर्व सुधार लेवें ।

सूचीपत्र ।

स

छंदःशास्त्र के साधारण नियम ।

१ छंद रचने का जिससे ज्ञान हो उस शास्त्र को पिङ्गल वा छंदःशास्त्र कहते हैं ।

२ पिङ्गल एक महर्षि का नाम है, उनको पिङ्गलाचार्य्य व शेषावतार भी कहते हैं ।

३ वेदों के छै अंगों में से छंद एक अंग है, वेद के छै अंग ये हैं—

१ छंद, चरण, २ कल्प, हस्त, ३ ज्योतिष, नेत्र, ४ निरुक्त, कर्ण, ५ शिक्षा, हृदय, ६ व्याकरण, मुख ॥

४ पद्यात्मक रचना को छंद कहते हैं जो रचना पद्यात्मक नहीं उसे गद्य कहते हैं ।

५ प्रत्येक छंद वर्णों के संयोग से बनता है ।

६ वर्ण दो प्रकार के हैं, १ लघु जिसका चिह्न (।) है, २ गुरु जिसका चिह्न (ऽ) है, एक तीसरा वर्ण प्लुत कहाता है जिस में गुरु से भी अधिक काल लगता है उसका प्रयोजन संगीत शास्त्र में पड़ता है । प्लुत की तीन मात्रा होती हैं ।

७ जिसके उच्चारण में थोड़ा काल लगे वह वर्णलघु कहाता है जैसे—

अ, इ, उ, क, कि, कु इत्यादि ।

८ अर्द्धचंद्र बिंदु वाले वर्ण भी लघु ही माने जाते हैं जैसे—

हँसी, गाँसी, फँसी इत्यादि ।

९ जिसके उच्चारण में अधिक काल लगे वह वर्णगुरु है जैसे—

आ, ई, ऊ, का, की, कू, के, कै, को कौ कं क.

१० संयुक्ताक्षर के पूर्व का लघुवर्ण गुरु माना जाता है जैसे—

सत्य, धर्म्म, चित्र, यहां 'स', 'ध' और 'चि' गुरु है ।

११ संयुक्ताक्षर के पूर्व के लघु पर जहां भार नहीं पड़ता वहां वह लघु का लघुही रहता है जैसे—

कन्हैया, जुन्हैया, तुम्हारी, यहा 'क', 'जु' और 'तु' लघुही है

१२ कभी२ चरण के अंत में लघुवर्ण इच्छानुसार गुरु माना जाता है क्योंकि इसका उच्चारण भी गुरुवत् होता है जैसे—

लीला तुम्हारी अति ही विचित्र-यह इन्द्रवज्रा वृत्त का एक चरण है । नियमानुसार इसके अंत मे एक गुरु होता है । यहा 'त्र' लघु को गुरु मान लिया और उच्चारण भी गुरुवत् किया ।

१३ दीरघ हू लघु कर पढ़ें, लघु ही दीरघ मान ।
मुख सों प्रगटे सुख सहित कोविद करत बखान ॥

अभिप्राय यह है कि वर्णों का गुरुत्व वा लघुत्व केवल उच्चारण पर निर्भर है जैसे—

गुरुवर्ण का लघुवत् उच्चारण—'करत जो बन सुर नर मुनि भ वन' यहां 'जो' का उच्चारण 'जु' के सदृश है अतएव 'जो' लघु माना गया ।

लघुवर्ण का गुरुवत् उच्चारण—'लीला तुम्हारी अति ही विचित्र' यहां 'त्र' गुरु माना गया देखो नियम १२ ।

१४ गुरुवर्ण की दो मात्रा और लघुवर्ण की एक मात्रा मानी जाती है जैसे—

SSS।		S।	
सीताराम	७ मात्रा	राम	३ मात्रा
S।S।		S।	
रामचंद्र	६ मात्रा	चित्र	३ मात्रा
SSS		S।	
सयोगी	६ मात्रा	सत्य	३ मात्रा
S S।		S।	
सिंगार	५ मात्रा	धन्य	३ मात्रा
SS।		S।	
ताटंक	५ मात्रा	धान्य	३ मात्रा
S।		S।	
दुःख	३ मात्रा	कार्य्य	३ मात्रा
।S		।।	
रमा	३ मात्रा	रम	२ मात्रा
S		।।	
वन्	२ मात्रा	सुख	२ मात्रा

१५ छंद दो प्रकार के हैं १ वैदिक और २ लौकिक। इस ग्रंथ में केवल लौकिक छंदों का वर्णन है, लौकिक छंदों के मुख्य दो भेद हैं १ मात्रिक वा जाति २ वर्णिक वा वृत्त।

१६ साधारण तया छंदके चार चार पद, पाद वा चरण होते हैं।

१७ जिस छंद के चारों चरणों में एक समान मात्रा हों परंतु वर्णक्रम एकसा न हो वही मात्रिक छंद है।

१८ जिस छंद के चारों चरणों में वर्णक्रम एकसा हो और उनकी संख्या भी समान हो वही वर्णिक वृत्त है।

१६ मात्रिक छंद और वर्णिक वृत्त की पहिचान का यह दोहा स्मरण रखिये

वर्णनि को क्रम एक सो, चहुं चरणनि में जोय ।
सोई वर्णिक वृत्त है, अन्य मातरिक होय ॥

(मात्रिक छंद)

१ पूरण भरत प्रीति मैं गाई	११ वर्ण	१६ मात्रा
२ मति अनुरूप अनूप सुहाई	१२ वर्ण	१६ मात्रा
३ अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन	१५ वर्ण	१६ मात्रा
४ करत जो बन सुर नर मुनि भावन	१५ वर्ण	१६ मात्रा

चौथे पद मे 'जो' को लघु माना । देखो नियम १३ ।

(वर्णिक वृत्त)

। । S । । S । । S । । S	
१ ज य रा म स दा सु ख धा म ह रे	१२ वर्ण
२ र घु ना य क सा य क चा प ध रे	१२ वर्ण
३ भ व वा र ण दा रु ण सिं ह प्र भो	१२ वर्ण
४ गु ण सा ग र ना ग र ना थ वि भो	१२ वर्ण

यहां चारो चरणो मे वर्णक्रम और वर्ण संख्या एक समान है ।

२० सम विषम पदों के संबन्ध से छदों के तीन तीन भेद होते हैं ।

१ सम—जिसके चारों चरणों के लक्षण एक से हों ।

२ अर्द्धसम--जिसके विषम विषम अर्थात् पहिला व तीसरा चरण एक समान हो और सम सम अर्थात् दूसरा व चौथा चरण एक समान हो । जो छंद दो पंक्तियों में लिखे जाते हैं उन के प्रत्येक पंक्ति को दल कहते हैं ।
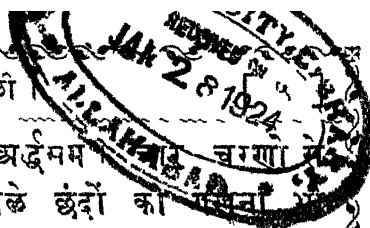
३ विषम—जो न सम हो न अर्द्धसम [illegible] चरणों से अधिक चरण वाले छंदों की गिनती भी विषम में है ।

२१ सम छंदों के भी दो उपभेद हैं

मात्रिक में ३२ मात्राओं तक साधारण और ३२ से अधिक मात्रा वाले दंडक छंद कहाते हैं ।

वर्णिक में २६ वर्णों तक साधारण और २६ से अधिक वर्ण वाले दंडक वृत्त कहाते हैं ।

२२ तीन तीन वर्णों के समूह को गण कहते है ऐसे गण ८ हैं

नाम गण	रेखारूप	वर्णरूप	उदाहरण	संकेताक्षर	शुभाशुभ
मगण	SSS	मागाना	माधोजी	म	शुभ
नगण	III	नगन	नमन	न	शुभ
भगण	SII	भागन	भावन	भ	शुभ
यगण	ISS	यगाना	यमागी	य	शुभ
जगण	ISI	जगान	जहान	ज	अशुभ
रगण	SIS	रागना	राधिका	र	अशुभ
सगण	IIS	सगना	सबका	स	अशुभ
तगण	SSI	तागान	तातार	त	अशुभ
गुरुवर्ण	S	गा	गा	ग	
लघुवर्ण	I	ल	ल	ल	

सू०—मगण, नगण तो शीघ्र कंठस्थ हो जाते हैं, शेष ६ गणों के स्मरण रहने की सब से सुगम रीति यह है कि पिङ्गल की षड्शब्दागायत्रीवत् इस पंक्ति को कंठस्थ कर लेवें—

‘भागन, यगाना, जगान, रागना, सगना, तागान’ ।

मात्रिक गण		
टगण ६	मात्रावाले	१३
ठगण ५	,,	८
डगण ४	,,	५
ढगण ३	,,	३
णगण २	,,	२

प्राचीन ग्रंथों में मात्रिक छंदों के लक्षण कहीं२ इन मात्रिक गणों द्वारा भी मिलते हैं, परंतु आजकल इस प्रथा की विशेष आवश्यक्ता न देख कर कविजन केवल संख्या वा सांकेतिक शब्दों द्वारा ही अपना इष्ट संपादन कर लेते हैं।

२३ 'मन भय जरसत गल' सहित दश अक्षर इन सोहिं।
सर्व शास्त्र व्यापित लखौ विश्व बिष्णु सों जोंहिं॥

'मन भय जरसत गल', ये पिंगल के दशाक्षर कहे जाते हैं।

शुभाशुभगण

२४ 'मन भय' सुखदा, 'जरसत' दुखदा।
अशुभ न धरिये, नर जु बरनिये॥

जगण, रगण, सगण और तगण मात्रिक छंदों के आदि में नहीं आने चाहियें। अभिप्राय यह है कि इन चारों गणों में से किसी गण का एक पूर्ण शब्द न हो यदि तीन वर्णों से अधिक वर्णों का एकही शब्द हो वा तीन वर्णों में दो शब्द हों तो दोष नहीं जैसे—

बखान—यह जगण पूरित शब्द है अतएव आदि मे दूषित है।

जहाँ, न—यद्यपि यह जगण है परन्तु दो शब्द हैं अतएव दोष रहित है।

कहा, न—यद्यपि यह जगण है परन्तु दो शब्द हैं अतएव दोष रहित है।

रामचन्द्र—एक रगण और एक लघु मिलकर चार वर्णों का एक पूर्ण शब्द है अतएव दोष रहित है और और देववाची भी है।

दग्धाक्षर

२५ दीजो भूलिन छंद के आदि 'झहरभष' कोय ।
दग्धाक्षर के दोष तें छंद दोषयुत होय ॥

दोषपरिहार

२६ मंगल सुरवाचक शब्द गुरु होवे पुनि आदि ।
दग्धाक्षर को दोष नहिं अरु गण दोषहुं वादि ॥

वर्णवृत्त में गणागण का दोष नहीं है क्योंकि वे गणबद्ध हैं । मात्रिक छंद के आदि में अशुभ गणों का प्रयोग नहीं करना चाहिये क्यों कि वे गणबद्ध नहीं है और स्वतंत्र हैं, दग्धाक्षर लघु होने से दूषित और गुरु होने से निर्दोष है, देवकाव्य, मंगलवाची शब्द, तथा लोक हित संबंधी काव्य में गणागण और दग्धाक्षर का दोष नहीं. दोष केवल नर काव्य में है इस को करे तो सावधानी से करे ।

२७ नरकाव्य में कहीं अशुभ गण पड़ जावे तो उसके आगे एक शुभगण रख देवे इसका विचार नीचे लिखे अनुसार जाने:—

मगण नगण ये मित्र हैं, भगण यगण ये दास ।
उदासीन जत जानिये, रस रिपु करत विनास ॥

मगण नगण	मित्र+मित्र=सिद्धि मित्र+दास=जय मित्र+उदा=हानि मित्र+रिपु=हानि
भगण यगण	दास+मित्र=सिद्धि दास+दास=हानि दास+उदा=पीड़ा दास+रिपु=पराजय
जगण तगण	उदा+मित्र=अल्पफल उदा+दास=दुःख उदा+उदा=विफल उदा+रिपु=दुःख
रगण सगण	रिपु+मित्र=शून्य रिपु+दास=हानि रिपु+उदा=शंका रिपु+रिपु=नाश

सूचना—यदि मात्रिक छंद के आदिही मे अर्थात् पहिले तीन वर्णों मे शुभगण आवेगा तो द्विगण के विचार की आवश्यकता नहीं यदि ऐसा न हो तो आदि के तीन वर्णों मे इसका विचार करलेवें।

शब्द और पद ।

२८ विभक्ति सहित शब्द को पद कहते हैं जैसे—

घर यह शब्द है—घरमे वा घरै यह पद है

जहां२ पदांत मे यति का अर्थात् विश्राम का विधान हो वहां पद पूर्ण होना चाहिये। पद पूरे एक चरण को भी कहते है और यति के संबन्ध से एक चरण में भी अनेक पद होते है जहां जिसका ग्रहण हो वहा उसी को लेना चाहिये।

इस ग्रंथ की रचना ही इस प्रकार की है कि उसी से यति भी विदित होती है तथापि सन्दिग्ध स्थानो मे छंदो के नाम के आगे यतिसूचक अंक भी लगा दिये हैं। जहा कोई विधान नहीं वहां यति बहुधा पादांत मे वा कवि की इच्छा पर निर्भर है॥

२६– मात्रिक छंदों की वर्ण संज्ञा और संख्या।

मात्राओं की संख्या	वर्ण संज्ञा	कुल भेद अर्थात् छंद संख्या	मात्राओं की संख्या	वर्ण संज्ञा	कुल भेद अर्थात् छंद संख्या
१	चान्द्र	१	१७	महासंस्कारी	२५८४
२	पाक्षिक	२	१८	पौराणिक	४१८१
३	राम	३	१९	महापौराणिक	६७६५
४	वैदिक	५	२०	महादैशिक	१०९४६
५	याज्ञिक	८	२१	त्रैलोक	१७७११
६	रागी	१३	२२	महारौद्र	२८६५७
७	लौकिक	२१	२३	रौद्रार्क	४६३६८
८	वासव	३४	२४	अवतारी	७५०२५
९	आंक	५५	२५	महावतारी	१२१३९३
१०	दैशिक	८९	२६	महाभागवत	१९६४१८
११	रौद्र	१४४	२७	नाक्षत्रिक	३१७८११
१२	आदित्य	२३३	२८	यौगिक	५१४२२९
१३	भागवत	३७७	२९	महायौगिक	८३२०४०
१४	मानव	६१०	३०	महातैथिक	१३४६२६९
१५	तैथिक	९८७	३१	अश्वावतारी	२१७८३०९
१६	संस्कारी	१५९७	३२	लाक्षणिक	३५२४५७८

३२ मात्राओं से अधिक मात्रा वाले छंद मात्रिक दंडक कहाते हैं इनकी संख्या भी इसी रीति से अर्थात् पिछले दो संख्याओं के योग से निकल सकती है॥

१०— वर्णवृत्तों की वर्ग संज्ञा और संख्या ।

वर्ण	वर्ग संज्ञा	सम्पूर्ण भेद अर्थात् वृत्त संख्या	वर्ण	वर्ग संज्ञा	सम्पूर्ण भेद अर्थात् वृत्त संख्या
१	उक्था	२	१४	शर्करी	१६३८४
२	अत्युक्था	४	१५	अतिशर्करी	३२७६८
३	मध्या	८	१६	अष्टि.	६५५३६
४	प्रतिष्ठा	१६	१७	अत्यष्टि	१३१०७२
५	सुप्रतिष्ठा	३२	१८	धृति	२६२१४४
६	गायत्री	६४	१९	अतिधृति.	५२४२८८
७	उष्णिक्	१२८	२०	कृति	१०४८५७६
८	अनुष्टुप्	२५६	२१	प्रकृति	२०९७१५२
९	बृहती	५१२	२२	आकृति	४१९४३०४
१०	पङ्क्ती	१०२४	२३	विकृति	८३८८६०८
११	त्रिष्टुप्	२०४८	२४	संस्कृति	१६७७७२१६
१२	जगती	४०९६	२५	अतिकृति	३३५५४४३२
१३	अति जगती	८१९२	२६	उत्कृति	६७१०८८६४

२६ वर्ण से अधिक वर्ण जिस वृत्त मे हो उसे दण्डक कहते हैं उनकी भी संख्या इसी हिसाब से दूनी२ करके निकाल लो ।

३१—यह छंदःशास्त्र छंद महोदधि है इसमें असंख्य रत्न भरे पड़े हैं केवल गुरु पिंगलाचार्य्य महाराजही इन सब को प्रगट करने में समर्थ हैं। प्रस्तारादि रीति से उनकी संख्या और रूप विदित हो सक्ते हैं। जो छंद प्रगट हो चुके हैं उन के नाम दिये गये हैं। जो छंद अब तक प्रगट नहीं हुए वे सब 'गाथा' कहे जाते हैं किसी सत्पात्र द्वारा जब कभी कोई नवीन छंद प्रगट हुआ तब उसका वह नामकरण भी कर सक्ता है ।

अब इसके आगे सांकेतिक और पारिभाषिक शब्दावलि लिखी जाती है।

३२– शब्दावलि (सांकेतिक)

१ शशि, भू	११ शिव, हर, भव
२ भुज, पक्ष, नैन	१२ रवि, राशि, भूषण, मास
३ गुण, राम, ताप, काल, अग्नि	१३ भागवत, नदी
४ वेद, वर्ग, फल, युग, आश्रम, अवस्था	१४ मनु, विद्या, रत्न, भुवन
५ सर, गति, वन, शिवमुख, कन्या, तत्त्व, प्राण, यज्ञ, वर्ग, गव्य	१५ तिथि
६ शास्त्र, राग, रस, ऋतु, वेदांग, ईति	१६ श्रृंगार, चंद्रकला
७ अश्व, मुनि, लोक, पुरी, वार, स्वर, द्वीप, सिंधु, पाताल, पर्वत	१८ पुराण, स्मृति
८ वसु, सिद्धि, योग, याम, दिग्गज, अहि, अंग	२० नख
९ भक्ति, निधि, अंक, ग्रह, नाडी, भूखंड, छिद्र, द्रव्य	२५ प्रकृति
१० दिसि, दश, दोष, अवतार, दिग्पाल	२८ नक्षत्र
	३० मासदिवस
	३२ लक्षण, दंत
	३३ देव
	३६ रागिणी
	४९ पवन
	५६ भोग
	६३ वर्णमाला
	६४ कला

सूचना–इनके पर्याय वाची शब्द भी व्यवहृत होते हैं।

शब्दावलि (पारिभाषिक)

ल—एक लघु ।	द्विय—दूसरा
ग—एक गुरु S	यति—विश्राम
लल—दो लघु ।।	विरति—विश्राम
लग—लघु गुरु ।S	कल, कला, मत्ता, मत्त—मात्रा
गल, नंद, पौन, ग्वाल-गुरु लघु S।	द्विकल—दो मात्रावाला शब्द जैसे रा, रम इत्यादि
गग, कर्ण, दो गुरु SS	त्रिकल—तीन मात्रावाला शब्द जैसे रमा, राम, रमण इत्यादि
वलय—तीन लघु ।।।	चौकल—चार मात्रावाला शब्द जैसे रामा, रावण, हलधर,
मुरारि—जगण ।S।	
गंत—गुरु हो अंत में जिसके	
गादि—गुरु हो आदि में जिसके	
भन्ता—भगण हो अंत में जिसके	
जगन्त—जगण और एक गुरु हो जिसके अंत में	

३३— उपदेश

प्रिय पाठको! छंद रचना करते समय नियम के अतिरिक्त छंद की ध्वनि अर्थात् लय पर विशेष ध्यान रखिये। चरणांतर्गत जहां जहां यति अर्थात् विश्राम बताये गये हैं वहां वहां पद पूर्ण होना चाहिये (देखो नियम २८) कविता करो तो ईश्वर वा देशहित संबंधी कीजिये। वर्णिक की अपेक्षा मात्रिक छंदों की रचना विशेष सावधानी से कीजिये और रचना करने के पूर्व्व श्रीगुरु पिङ्गलाचार्य महाराज का तथा वाग्देवी सरस्वती का स्मरण अवश्य कीजिये, इतिशम्॥

कार्तिक शुक्लाएकादशी,
संवत १९७३
बिलासपुर (मध्यप्रदेश)

जगन्नाथ प्रसाद,
भानु-कवि।

मात्रिक छंद विषयक सूचना ।

प्रिय पाठको! इस ग्रंथ में मात्रिक छंदों के लक्षण सूत्रवत् एक एकही चरण में दिये है वे सब लक्षण, नाम सहित स्वयं उदाहरण स्वरूप हैं । चार चरणों में एक छंद पूर्ण होता है । मात्रिक छंद रचते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि चारों चरणों की मात्रिक संख्या एक समान हो, परन्तु उन चरणों का वर्णक्रम एक समान न हो किसी एक वा अधिक चरणों के वर्णक्रम में अंतर अवश्य होना चाहिये । अभिप्राय यह है कि प्रथम चरण में जैसा वर्णक्रम पड जावे वैसा शेष तीन चरणों में न रहे यहां तक कि यदि तीन चरणों तक की मात्रिक संख्या और वर्णक्रम एक से हों और किशी एक चरण के ही वर्णक्रम में अंतर पड़ जावे तो भी वह मात्रिक छंद ही माना जायगा । जहां चारों चरणों की मात्रिक संख्या और वर्णक्रम एक से हों वह वर्णिक वृत्त हो जायगा । इसके ज्ञानार्थ सूत्रवत् इस पंक्ति का स्मरण रखिये—

'अक्रममत्ता, सक्रमवृत्ता'

यदि मात्रिक छंद रचते समय कोई छंद ऐसा बन जावे कि जिसके चारों चरणों की मात्रिक संख्या समान हो और वर्णक्रम भी एक समान हो तो उसे मात्रिक छंद न मानकर वर्णिक वृत्त मानो और यदि वर्णिक वृत्तों में उसका कोई विशेष नाम न हो तो मात्रिक छंद में जो उसका नाम है उसी नाम का वर्णिक वृत्त मानो, जैसे,तोमर वर्णिक, रोला वर्णिक, सार वर्णिक इत्यादि । नीचे दो उदाहरण दिये जाते हैं—

तोमर मात्रिक

	मात्रा	वर्ण
पुनि रामचंद्र कृपाल	१२	९
कहा कपिन तिहि काल	१२	९
किहि भांति जारी लंक	१२	८
हति राक्षसा अति बंक	१२	९

तोमर वर्णिक

। । ऽ । ऽ । । ऽ ।	मात्रा	वर्ण
पुनि रामचंद्र कृपाल	१२	९
कपिते कहा तहि काल	१२	९
किहि भाति जान्यउ लंक	१२	९
हति राक्षसा अति बंक	१२	९

यशोदा (मात्रिक)

	मात्रा	वर्ण
सुनौ हमारी	८	५
कृष्ण मुरारी	८	५
अहौं अनाथा	८	५
करौ सनाथा	८	५

यशोदा (वर्णिक)

। ऽ । ऽ ऽ	मात्रा	वर्ण
जगौ गुपाला	८	५
सुभोर काला	८	५
कहै यशोदा	८	५
लहै प्रमोदा	८	५
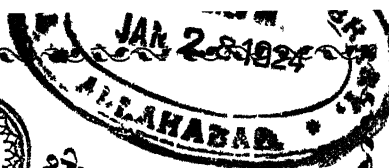
॥ दोहा ॥

श्रीगुरु पिंगलराय के, चरण बंदि अभिराम ।
भानु-छंद सारावली, जनहित रचत ललाम ॥

अथ मात्रिक सम छंदांसि ।

७ मात्राओं के छंद

१ सुगती (अंत में ऽ)

तुरग सुगती ।

इस को शुभ गति भी कहते हैं ।

८ मात्राओं के छंद

१ छबि (अंत में ।ऽ।)

बसु छबि मुरारि ।

इसे मधुभार भी कहते हैं ।

९ मात्राओं के छंद

१ गंग (अंत में ऽऽ)

वर गंग भक्ती ।

२ निधि (अंत में ।)

निधि लहौ अपार ।

---

१ इस दोहे में पिङ्गल के दशाक्षरो का स्मरण है अर्थात् 'मन भय जरसत गल'

१० मात्राओं के छंद

१ दीप (अंत में ।।।ऽ।)

धातू सह दस दीप ।

११ मात्राओं के छंद

१ अहीर (अंत में ।ऽ।)

शिव कल सजौ अहीर ।

इसे आभीर भी कहते हैं ।

२ शिव ।

शिव सगो सदा सरंन ।

३ भव (अंत में ऽ व ।ऽऽ)

भवहिं गाय भजहुरे ।

१२ मात्राओं के छंद ।

१ तोमर (अंत में ऽ।)

तोमर सु द्वादश पौन ।

२ लीला (अंत में ।ऽ।)

रवि कल लीला मुरारि ।

३ नित (अंत में ।ऽ वा ।।।)

नित नव राम सों लगन ।

१३ मात्राओं के छंद

१ उल्लाला ८, ५

उल्लाला बसु, गति कला ।

इसे चंद्रमणि भी कहते हैं ।

१ अंत मे ।।ऽ, ऽ।ऽ वा ।।।

१४ मात्राओं के छंद

१ कज्जल (अंत में ऽ।)

कज्जल भौन मत्ता पौन।

२ सखी (अंत में ऽऽऽ वा ।ऽऽ)

कल भुवन सखी रचमाया।

३ विजात (आदि।)

लहो विद्या विजाती की।

इसके दुगुने में ग़ज़ल की एक चाल होती है।

४ हाकल।

कल जहँ निधी गति, हाकला।

५ सुलक्षण।

मुनि मुनि पौन सुलछन तौन।

६ मनमोहन (अंत में ।।।)

मनु मनमोहन धरो बलय।

७ मनोरम (आदि ऽ अंत में ऽ।। वा ।ऽऽ)

गो मनोरम रत्न भायो।

१५ मात्राओं के छंद

१ चौबोला (अंत में ।ऽ)

बसु मुनि लग चौबोला रचो।

२ गोपी।

गुणहु भुज शास्त्र वेद गोपी।

३ चौपई (अंत में ऽ।)

तिथि कल पौन चौपई माँहिं।

इसको जयकरी भी कहते हैं।

४ गुपाल (अंत मे ।ऽ।)

बसु मुनि कल धरि, सजहु गुपाल।

इसको भुजंगिनी भी कहते हैं ।

५ पुनीत (अंत में ऽऽ।)

तिथिकल पुनीत है हे तात ।

इसकी पांचवी मात्रा सदा लघु रहती है ।

१६ मात्राओं के छंद

१ पद्धरि (अंत में ।ऽ।)

बसु बसु कल पद्धरि लेहु साज ।

२ पज्झटिका ।

बसु गुरु रसजन है पज्झटिका ।

८+ग+४+ग (जगण का निषेध)

३ अरिल्ल (अंत में ।। वा ।ऽऽ)

सोरह जन लल यहौ अरिल्ला ।

इसमें जगण का निषेध है ।

४ डिल्ला (अंत में ऽ।।)

वसु वसु भन्ता, डिल्ला जानहु ।

५ सिंह (आदि ।। अंत ।।ऽ)

लल सोरह कल सिंहहिं सरसैं ।

इसी के दूने को कामकला कहते हैं ।

६ चौपाई

सोरह क्रम न 'ज त' न चौपाई ।

इसके नियम निम्न लिखित हैं :—

सू०—अंत में जगण अथवा तगण न पड़ें अर्थात् ऽ। न हों । चौपाई के दो

चरणों को अर्धाली कहते है। चौपाई को रूपचौपाई वा पादाकुलक भी कहते है।

१७ मात्राओं के छंद

१ राम (६, ८ अंत में ।SS)

मनु राम गाये, सुभक्ति सिद्धी।

२ चंद्र।

भत्त सत्रा लहौ रुचिर चंद्रै।

इसकी आठवीं मात्रा लघु रहती है।

१८ मात्राओं के छंद

१ राजीवगण।

नौ नौ राजीवगण कल धारिये।

इसे माली भी कहते हैं।

२ शक्ति।

दुती चौगुनी पञ्च शक्ती सरन।

इसके अंत में ।।S, S।S, ।।। होता है।

१९ मात्राओं के छंद

१ पीयूष वर्ष (अंत में S।S वा ।S)

दिसि निधी पीयूष, बरसत झरि लगा

इसे आनंद वर्धक भी कहते हैं। अंत में रगण वा लघुगुरु विशेष रोचक हैं परंतु नगण रहने पर भी दोष नहीं।

२ सुमेरु (१२, ७ वा १०, ६)

रवी के लोकहू रचिये सुमेरू[1]।

३ सगुण (अंत में ।ऽ।)

सगुण पंच चारौं जुगन बंदनीय।

४ नरहरी (१४, ५ अंत में ।।।ऽ)

मनु सरन गहे सब देवा, नरहरी।

५ दिंडी (६, १० अंत ऽऽ)

करण भक्ती की दोषहरण दिंडी।

२० मात्राओं के छंद

१ योग (अंत में ।ऽऽ)

द्वादश पुनि आठ सुकल, योग सुहायो।

२ शास्त्र (अंत में ऽ।)

मुनी के लोक लहिये शास्त्र आनंद।

३ हंसगति।

शिव सु अंक कलहंस गती भन पिंगल।

४ मंजुतिलका (अंत में ।ऽ।)

रच मंजु तिलकाहिं कल, भानु बसु साजि।

१ पाठान्तर-रवी के लोक कहुं दस नव सुमेरु।

२१ मात्राओं के छंद

१ प्लवंगम (८, १३)

गादि बसू दिसि, राम जगन्त प्लवंगमै।

८, १३ पर यति हो। आदि में गुरु और अंत में एक जगण और एक गुरु होना आवश्यक है। इसको अरल भी कहते हैं।

२ चान्द्रायण (११, १०)

शिव दश कला सुचन्द्र, अयन कवि कीजिये।

३ तिलोकी।

सोरह पर कलपंच तिलोकी, जानिये।

तिलोकी के अंत में दो पद हरिगीतिका के रखकर कवियों ने उसका नाम अमृतकुंडली माना है।

४ संत (३, ६, ६, ६)

गुणौ, शास्त्र छहौ, राग सदा, संत भजौ।

५ भानु (६, १५)

रससानी, बानी भानु राम पद प्रेम।

२२ मात्राओं के छंद

रास (८, ८, ६ अंत में ।।ऽ)

बसु बसु धारो, पुनि रस सारो, रास रचो ।

२ राधिका ।

तेरा पै सजे नव कला, राधिका रानी ।

३ बिहारी (८, ६, ८)

द्वै चारै छै, आठ रचो, रास बिहारी ।

४ कुण्डल (१२, १० अंत मे ऽऽ)

भानु राग कर्ण देखि, कुंडल पहिरायो ।

५ उड़ियाना (१२, १० अंत ऽ)

भानु दिशा गंत जहां उड़ियाना कहिये ।

६ सुखदा (१२, १०)

रवि दसहूं दिसि भ्राजै, सब लोकन सुखदा ।

२३ मात्राओं के छंद

१ उपमान (१३, १० अंत ऽऽ)

तेरह दस उपमान रच दै अंतै कर्णा ।

२ हीर (६, ६, ११ अंत में ऽ।ऽ)

शास्त्र पढ़ौ, राग कहौ, शंभु भजौ हीर में।

३ जग (१०, ८, ५)

दिसि योगै धारे, सुगति मिलैरे, जग मांझ।

४ संपदा (११, १२ अंत।)

शिव आभरण सुधारि, सकल संपदा सु लेहु।

२४ मात्राओं के छंद

१ रोला (११, १३) (५ र्ष्ट)

रोला की चौबीस, कला यति शंकर तेरा।

इसे काव्य और काम्य भी कहते हैं।

२ दिग्पाल।

सविता विराज दोई, दिगपाल छंद सोई।

रेखता भी इसी ढंग का होता है। इसे मृदुगति भी कहते हैं।

३ रूपमाला (१४, १० अंत ऽ।)

रत्न दिसि कल रूपमाला, साजिये सानन्द।

इसे मदन भी कहते हैं।

४ शोभन (१४, १० अंत में ।ऽ।)

चौबिस कला त्रिया दिसा, मंजु शोभन साज ।

इसे सिंहिका भी कहते हैं ।

५ लीला (अंत में ।।ऽ)

जहँ मुनि कला, सगुण कुशला, गुन लीलाहिं, भली ।

२५ मात्राओं के छंद

१ गगनानंग (अंत ऽ।ऽ)

सोरह नव कल धरि कवि गावहु, गगन अनंगहीं ।

२ मुक्तामणि (अंत ऽऽ)

तेरह रवि कल कर्ण सह, मुक्तामणि रचि लीजे ।

३ सुगीतिका (१५, १० अंत में ऽ।)

सुगीतिका तिथि औ दिशा शुभ, गाइये सानंद ।

२६ मात्राओं के छंद

१ शंकर (१६, १० अंत ऽ।)

सोला दोष कला यति कीजे, शंकरै सानन्द ।

२ विष्णुपद (१६, १० अंत ऽ)

सोरह दस कल अन्त गहो भल,
सब तें विष्णु पदे ।

३ कामरूप (९, ७, १० अंत में ऽ।)

निधि नगहिं दिसि धरि, कामरूपहिं
साज गल युत मित्त ।

इसी का नाम कहीं२ बैताल पाया
जाता है ।

४ झूलना प्रथम (७, ७, ७, ५ अंत ऽ।)

मुनि राम गुनि, बान युत गल,
झूलन प्रथम, मतिमान ।

५ गीतिका-मात्रिक (१४, १२ अंत ।ऽ)

रल रविकल धारिकै लग, अंत
रचिये गीतिका ।

६ गीता (१४, १२ अंत ऽ।)

कृष्णार्जुन गीता भुवन, रवि सम
प्रगट सानंद ।

२७ मात्राओं के छंद

१ सरसी (१६, ११ अंत ऽ।)

सोरा संभु यती गल कीजै, सरसी
छंद सुजान ।

इसका दूसरा नाम कबीर और सुमंदर भी है ।

२ शुभगीता (१५, १२ अंत ऽ।ऽ)

सु धन्य तिथि मासहिं जुपार्थहिं,
कृष्ण शुभ गीता कही ।

२८ मात्राओं के छंद

१ सार (१६, १२ अंत में ऽऽ)

सोरह रविकल अन्तै कर्णा, सार
छन्द रच नीको ।

सार छंद के अंत में कर्ण अर्थात् दो गुरु विशेष रोचक होते हैं, दो गुरु से अधिक गुरु होने में भी हानि नहीं, अंत में एक गुरु अथवा दो लघु रखना मध्यम पक्ष है। मराठी की साकी भी इसी ढंग की होती है प्रभाती की चाल इससे मिलती है। सार छंद के अन्य नाम दोवै और ललितपद हैं।

२ हरिगीतिका (१६, १२ अंत ।ऽ) जगण वर्जित

(५६८) श्रृंगार भूषण अंत लग जन, गाइये
हरिगीतिका ।

३ विधाता (१४, १४)

लहौ विद्या लहौ रव्वै, लहौ रचना
विधाता की ।

इसकी १ली, ८वीं और १५वीं मात्रा सदा लघु रहती हैं। इसे शुद्धगा भी कहते हैं।

४ विद्या (१४, १४ आदि में (।) अंत में ।SS)

लहौ मीत सदा सत्संग, जग विद्या रत्न जु पायो ।

२९ मात्राओं के छंद

१ चुलियाला (१३, १६)

तेरह सोरह मत्त धरि, चुलियाला रच-छंद जु ला चित ।

सूचना-दोहे पर ५ मात्रा अधिक हों ।

२ मरहटा (१०, ८, ११ अंत S।)

दिसि वसु शिव यति धरि, अन्त ग्वाल करि, रचिय मंरहटा छंद ।

३ मरहटा माधवी (११, ८, १० अंत ।S)

शिव बसु दिसि जहँ कला, लगे अति भला, मरहटा माधवी ।

३० मात्राओं के छंद

१ चवपैया (१०, ८, १२ अंत S)

दिसि वसु रवि मत्तन, धरि प्रतिपद्दन, गुरु अंतहिं चवपैया ।

\ २ ताटङ्क (१६, १४ अंत में ऽऽऽ)

सोरह रस कला प्रतिपादहिं, है ताटंकै मो अंतै ।

सूचना—लावनीभी इसी धज पर गाई जाती है । लावनी के अंत में गुरु लघु का कोई विशेष नियम नहीं है ।

३ कुकुभ (१६, १४ अंत में ऽऽ)

सोरह रस कला प्रतिपादै, कुकुभा अंतै दै कर्णा ।

४ रुचिरा (१४, १६ अंत में ऽ) जगण वर्जित

मत्त धरौ मनु और कला, जन गंत सुधारि रचौ रुचिरा ।

५ शोकहर (८, ८, ८, ६ अंत में ऽ)

बसु गुन साजिये, पुनि रस धरिये, अंत गुरू पद, शोकहरं ।

८, ८, ८ और ६ पर विश्राम है । अंत में गुरु हो इसे शुभंगी भी कहते हैं ।

६ सारथी (६, १२, १२ अंत में ऽऽ)

रस रंजित, भूषण भानु सारथी, अंते कर्णा साजो ।

३१ मात्राओं के छंद ।

१ वीर (१६, १५ अंत ऽ।)

वसु वसु तिथि सानन्द सवैया, यारो
बीर पंवारो गाव ।

चौपाई और चौपई मिलकर यह छंद सिद्ध
होता है, आल्हा की चाल भी यही है ।

३२ मात्राओं के छंद ।

१ त्रिभंगी ।

दस बसु वसु संगी, जन रस रंगी, छंद
त्रिभंगी, गन्त भलो ।

१०, ८, ८ और ६ पर विश्राम है । जगण
का निषेध है। अंत में गुरु होता है। चौपाई
छंद के अंत में एक त्रिभंगी छंद रखकर
कवियों ने उसका नाम हुल्लास रखा है ।

२ पद्मावती ।

दस वसु मनु मत्तन, पै विरती जन, दै
पद्मावति इक कर्णा ।

१०, ८, १४ पर विश्राम है । जगण का
निषेध है अंत में दो गुरु हैं ।

३ समान सवैया ।

सोरह सोरह मत्त धरहुजू, छन्द समान सवैया सोभत ।

१६, १६ पर यति है । अंत में भगण हो । वह छंद चौपाई का दूना होता है । इसे सवाई भी कहते हैं ।

४ दण्डकला ।

दस वसु विद्या पै, बुध विरती दै, अन्त सगन जन दण्डकला ।

१०, ८ और १४ पर विश्राम है । अंत में सगण हो । जगण निषेधित है । यही छंद यदि यगणान्त हो तो लीलावती कहायगा ।

५ दुर्मिल ।

दस बसु मनु कलनों, गुरु द्वै पद सों, जन दुर्मिल सबहीं भायो ।

१०, ८ और १४ पर विश्राम है । आदि में जगण का निषेध है । अंत में एक सगण और दो गुरु मधुर होते हैं ।

६ खरारी (८, ६, ८, १०)

द्वै चारै छै, आठ दसै, मत्त सजाओ, लै नाम खरारी ।

॥ इति मात्रिक समछंदांसि ॥

अथ मात्रिक दण्डकाः।

सू०—३२ से अधिक मात्रा वाले छंद दण्डक कहाते हैं।

३७ मात्राओं के छंद

१ करखा।

धरि मुनि तीसै, बसु भानु बसु अंक
यति, यों रचहु छंद, करखा सुधारी।

८, १२, ८ और ९ पर विश्राम है। अंत में यगण हो।

२ हंसाल।

बीसै सत्रह यति धरि निःसंक रचौ, सबै
यह छंद हंसाल भायो।

२०, १७ पर यति है। अंत में यगण हो।

३ द्वितीय झूलना।

दोष गुण देखिये, लोक मत लेखिये,
गति दूजी लहियत, झूलना यों।

१०, १०, १० और ७ पर विश्राम है। अंत में यगण हो।

४ तृतीय झूलना।

तीन दस झूलना, अंत मुनि भूलना, दोय
पद तीसरो, भेद भायो।

इसके दो ही पद होते हैं।

४० मात्राओं के छंद

१ मदनहर ।

दस वसु मनु यामा, गंत ललामा, आदि
लला दै मंजु गहौ, पद मदन हरे ।

१०, ८, १४ और ८ पर विश्राम है । आदि में दो लघु और अंत में एक गुरु है । इसे मदनगृह भी कहते हैं ।

२ उद्धत ।

दस दस दस दस कल, पुनि अंत धरौ गल,
मन राखि अचंचल, साज उद्धत छंद ।

१०, १०, १० और १० पर विश्राम है । अंत में गुरु लघु हो ।

३ शुभग ।

दुइ नख धरहु मत्त, कह पिंगल जु सत्त,
यति दोष गुनि तत्त, शुभगै रचौ मित्त ।

१०, १०, १० और १० पर यति है । अंत में तगण हो ।

४ विजया ।

दिसन चहुं छारही, किरति विजया मही,
दनुज कुल घालही, जनन कुल पालही ।

इसमें दस दस मात्राओं का चार समूह होता है । अन्त में रगण हो ।

४६ मात्राओं के छंद

१ हरिप्रिया ।

सूरज गुन दिसि सजाय, अंतै गुरु
चरण ध्याय, चित्त दै हरिप्रियाहिं
कृष्ण कृष्ण गावौ ।

१२, १२, १२ और १० पर विश्राम है ।
अंत में गुरु हो ।

॥ इति मात्रिक दंडकाः ॥

अर्थ मात्रिकार्द्धसमछंदांसि ।

सूचना—विषम अर्थात् पहला और तीसरा पद,
सम अर्थात् दूसरा और चौथा पद ।

चारों पद मिलकर ३८ मात्राओं के छंद

१ बरवै ।

विषमनि रविकल बरवै, सम मुनि साज।

विषम पद में १२ और सम पद में ७ मात्राएँ होती हैं। अन्त में जगण रोचक होता है।

२ मोहिनी ।

सुकल मोहिनी बारा, सम मुनि लसै ।

विषम पद में १२ और सम पद में १२ मात्राएँ होती हैं ।

चारों पद मिलकर ४२ मात्राओं के छंद

१ अति बरवै ।

विषमनि रवि अति बरवै, समकल निधि साज ।

इसके विषम पद में १२ और सम पद में ९ मात्राएँ होती हैं ।

चारों पद मिलकर ४८ मात्राओं के छंद

१ दोहा ।

जा न विषम तेरा कला, सम शिव दोहा मूल ।

विषम चरणों में १३ और सम चरणों में ११ मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण

के आदि में जगण नहीं होना चाहिये। अंत में लघु हो। जिस दोहे के आदि में जगण पूरित शब्द हो वह दोहा चांडालिनी कहाता है, बखान, कमान इत्यादिक जगण पूरित शब्द हैं।

२ सोरठा।

सम तेरा विषमेश, दोहा उलटे सोरठा।

सम चरणोंमें १३ और विषम चरणों में ११ मात्राएँ होती हैं। दोहे का उलटा सोरठा है।

चारों पद मिलकर ५२ मात्राओं के छंद

१ दोही।

विषमनि पंद्रा साजो कला, सम शिव दोही मूल।

विषम चरणों में १५ और सम चरणों में ११ मात्राएँ होती हैं। अंत में लघु हो।

चारों पद मिलकर ५४ मात्राओं के छंद

१ हरिपद।

विषम हरीपद कीजिय सोरह, सम शिव दै सानन्द।

विषम चरणों में १६ और सम चरणों में ११ मात्राएँ होती हैं। अंत में गुरु लघु होते हैं।

चारों पद मिलकर ५६ मात्राओं के छंद

१ उल्लाल । (५ १००)

विषमनि पन्द्रह धरिये कला, सम
तेरा उल्लाल कर ।

विषम चरणों में १५ और सम चरणों में १३ मात्राएँ होती है ।

सू०–१३ और १३ मात्राओं का भी उल्लाला छंद होता है ।

चारों पद मिलकर ६० मात्राओं के छंद

१ रुचिरा (द्वितीय) अंत SS

विषम चरण कल धारहु सोला, रुचिरा
विय सम मनु कर्णा ।

विषम चरणों में १६ और सम चरणों में १४ मात्राएँ होती हैं ।

चारों पद मिलकर ६२ मात्राओं के छंद

१ धत्ता ।

दीजे धत्ता इकतिस मत्ता द्वै, नौ तेरा
अन्तहिं नगन ।

विषम चरणों में १८ और सम चरणों में १३ मात्राएँ होती हैं । अंत में तीन लघु होते हैं ।

२ घत्तानन्द ।

इकतिस मत्तानन्द, घत्तानन्द, शंकर
मुनि तेरह बलय ।

११, ७ और १३ के विश्राम से प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ होती हैं। अंत में तीन लघु होते हैं।

॥ इति मात्रिकार्द्धसमछंदांसि ॥

अथ मात्रिक-विषम छंदांसि ।

चारों पद मिलकर ५७ मात्राओं के छंद

१ लक्ष्मी या बुद्धि ।

प्रथम दलहिं मत्ताधर तीसै, दूजे पुरान नौ रूरो । दै बुद्धी लक्ष्मीनाथा, ग्रंथै मैं करौं पूरो ॥

इसके प्रथम दल में ३० और दूसरे दल में २७ मात्राएँ होती हैं ।

चारों पद मिलकर ६२ मात्राओं के छंद

१ गाहिनी ।

आदौ बारा मत्ता, दूजे द्वै नौ सजाय मोद लहौ । तीजे भानू कीजे, चौथे बीसे जु गाहिनी सुकवि कहो ।

पहले दल में १२+१८ और दूसरे दल में १२+२० मात्रा होनी हैं । अन्त में गुरु होता है । बीस बीस मात्राओं के पीछे एक जगण होता है ।

१ सिंहनी ।

आदौ बारा मत्ता, कल धरि बीस जु सुगंत दूजे चरना । तीजे प्रथमै जैसे, सिंहनि दस बसु चतुर्थ पद धरना ।

पहले दल में १२+२० और दूसरे दल में

१२+१८ मात्राएँ होती हैं। २० मात्राओं के पीछे एक जगण रहता है। अन्त में गुरु होता है।

६ पद मिलकर १४४ मात्राओं के छंद

१ अमृतधुनि।

अमृतधुनि दोहा प्रथम, चौबिस कल सानन्द। आदि अन्त पद एक धरि, स्वच्छाच्चित रच छंद। स्वच्छाच्चित रच छंदद्ध्वनि लखि पद्दलि धरि। साजज्जमक तिबाज ज्झमक सुजाम-झ्मझ्झरि॥ पद्धरि सिर विद्वज्जन कर युद्धद्ध्वनि गुनि। चित्तत्थिर करि सुब्बिद्धरि कह यों अमृत धुनि।

२ कुंडलिया।

दोहा रोला जोरिकै, छै पद चौबिस मत्त। आदि अन्त पद एक सो, कर कुंडलिया सत्त। कर कुंडलिया सत्त, मत्त पिंगल धरि ध्याना। कवि जन वाणी सत्त, करै सब को कल्याना। कह पिंगल को

दास, नाथ जू मो तन जोहा। छन्द-
प्रभाकर मांहिं, लसैं रोला अरु दोहा॥

अंत पद को फिर आदि में लाना सिंहा-
वलोकन कहाता है। तीसरे पद को देखो।

६ पद मिलकर १४८ मात्राओं के छंद

छप्पय ।

रोला के पद चार, मत्त चौबीस धारिये।
उल्लाला पद दोय, अंत मांही सु धारिये।
कहुँ अट्ठाइस होईँ, मत्त छब्बिस कहुँ
देखौ। छप्पय के सब भेद, मीत इक-
हत्तर लेखौ। लघु गुरु के क्रम ते भये,
बानी कवि मंगल करन। प्रगट कबित
की रीति भल, भानु भये पिंगल सरन।

॥ इति मात्रिक विषम छंदांसि ॥

मात्रिकार्द्धसम वा विषमांतर्गत आर्य्या ।

आर्या में चार मात्रा के समूह को गण कहते हैं । यथा—

१ SS
२ IIS
३ ISI
४ SII
५ IIII

७ गण और १ गुरु से आर्य्या का पूर्वार्द्ध बनता है । विषम गणो मे जगण नहीं होता, ६ वां गण जगण हो अथवा चार लघु हो, जिसके उत्तरार्द्ध मे २७ मात्रा ही होती है वहां छटवा गण एक लघु का ही मान लिया जाता है ।

आर्य्या ।

आदौ तीजे बारा, दूजे नौ नौ कलान
को जु धरौ । चौथे तिथि आर्य्या सो,
विषम गणौ जन सुगंत करो ॥

विषम गणों में जगण का निषेध है । इसके मुख्य पांच भेद हैं । यथा—

नाम	मात्रा				योग
	पद १	पद २	पद ३	पद ४	
आर्या	१२	१८	१२	१५	५७
गीति	१२	१८	१२	१८	६०
उपगीति	१२	१५	१२	१५	५४
उद्गीति	१२	१५	१२	१८	५७
आर्यागीति	१२	२०	१२	२०	६४

आर्या की चाल बहुधा संस्कृत और मराठी भाषा मे है इसलिए पृथक् पृथक् उदाहरण नहीं दिये ।

गीति के अंत में दो दो मात्रा अधिक रखने पर आर्य्या गीति सिद्ध होती है ।

॥ इति मात्रिक छंद वर्णननाम प्रथमोऽध्यायः ॥

वर्णवृत्त विषयक सूचना ।

वर्णवृत्तों के लक्षण और नाम सूत्रवत् प्रायः एक एक ही चरण में उदाहरण स्वरूप लिखे गये हैं इन्हीं नियमानुसार चार चरणों में एक वृत्त पूर्ण होता है। वर्णवृत्तो के लक्षणों अर्थात् नियमों को समझने के लिये इस बात को ध्यान में रखना चाहिये कि पिंगल के दशाक्षर 'मनभयजरसतगल' हैं इन्हीं अक्षरों द्वारा जहां जिनकी आवश्यक्ता है सारावली निर्म्मित की गई है। इन दशाक्षरों के अंत में 'ग' और 'ल' हैं सारावली में भी इसी नियम का पालन हुआ है अर्थात् जहां कहीं 'ग' व 'ल' मिलें वहीं तक लक्षण का अंत समझना चाहिये। 'ग' वा 'ल' के पश्चात् यदि कोई अक्षर 'मनभयजर सत' मेंसे पुनः आवें तो वे गणसूचक नहीं हैं क्योंकि अंत 'ग' वा 'ल' तकही है हां कहीं२ संख्यासूचक ये अक्षर पुनः आगये हैं जैसे-रात्रि=रगण तीन, जतीन=जगण तीन इत्यादि इसके स्पष्टीकरणार्थ प्रत्येक वृत्त के नाम के आगे गणाक्षर भी लिख दिये गये हैं।

वर्णवृत्तों के चारों चरणों में वर्णक्रम सदा एकसा रहता है यदि किसी चरण में यह नियम भंग हुआ दीख पड़े परंतु मात्रिक संख्या एकसी हो तो वह मात्रिक छंद माना जायगा, यदि मात्रिक छंदों में उसका कोई विशेष नाम न मिले तो वर्णिक वृत्तों में जो उसका नाम है उसी नामका उसे मात्रिक छंद समझना चाहिये जैसे-भुजंगप्रयात मात्रिक, कुसुम

विचित्रा मात्रिक, चंपकमाला मात्रिक इत्यादि। नीचे एक उदाहरण दिया जाता है :—

चंपकमाला वर्णिक

S I I S S S I I S S	वर्ण	मात्रा
भूमि मगी ना मान बृथाहीं	१०	१६
कृष्ण लगो है या जग मांहीं	१०	१६
ताहि रिझैये ज्यो ब्रजबाला	१०	१६
डारि गरे में चंपक माला	१०	१६

चंपकमाला मात्रिक

	वर्ण	मात्रा
भूमि मगी मत मान बृथाहीं	११	१६
कृष्ण लगो है या जग मांहीं	१०	१६
ताहि रिझैये ज्यों ब्रजबाला	१०	१६
डारि गरे में चंपक माला	१०	१६

अथ सम वृत्तानि ।

१ वर्ण का वृत्त

१ श्री (ग)

गो । श्री ।

ये दो चरण हुए ।

२ वर्णों के वृत्त

१ कामा (ग ग)

गंगा । कामा ।

ये दो चरण हुए, इस वृत्त को स्त्री भी कहते हैं ।

२ सार (ग ल)

ग्वाल । सार ।

ये दो चरण हुए ।

३ मही (ल ग)

लगी । मही ।

ये दो चरण हुए ।

४ मधु (ल ल)

लघु । मधु ।

ये दो चरण हुए ।

३ वर्णों के वृत्त

१ नारी (म)

मो नारी ।

यह एक चरण हुआ । इसे ताली भी कहतेहैं ।

२ शशी (य)

यही तो । शशी है ।

ये दो चरण हुए ।

३ प्रिया (र)

री प्रिया ।

यह एक चरण हुआ । इसे मृगी भी कहते हैं ।

४ रमण (स)

सुखदा । रमणा ।

ये दो चरण हुए ।

५ पंचाल (त)

तू वीर । पञ्चाल ।

ये दो चरण हुए ।

६ मृगेन्द्र (ज)

जु एक । मृगेन्द्र ।

ये दो चरण हुए ।

७ मंदर (भ)

भूधर । मंदर ।

ये दो चरण हुए ।

८ कमल (न)

नवल । कमल ।

ये दो चरण हुए ।

४ वर्णों के वृत्त

१ कन्या (म ग)

मांगै-कन्या।

इसे तीर्णा भी कहते हैं।

२ क्रीड़ा (य ग)

युगी-क्रीड़ा।

इसी के दुगुने वा चौगुने को शुद्धगा वृत्त कहते हैं।

३ रंगी (र ग)

राग-रंगी।

४ देवी (स ग)

सग देवी।

इसे रमा भी कहते हैं।

५ धरा (त ग)

तुंगा-धरा।

६ सुधी (ज ग)

जगै-सुधी।

७ कला (भ ग)

भाग-कला।

८ सती (न ग)

नग-सती।

इसे तरणिजा भी कहते हैं।

९ तारा (म ल)

तारा-मूल।

१० उषा (य ल)

उषा यालि।

इसे मुद्रा भी कहते हैं।

११ धारि (र ल)

राल-धारि।

१२ पुंज (स ल)

सिल पुंज।

१३ कृष्ण (त ल)

कृष्णा तुल।

१४ हरा (ज ल)

हरा-जल।

१५ निसि (भ ल)

भूल निसि।

१६ हरि (न ल)

नल हरि।

५ वर्णों के वृत्त

१ सम्मोहा (म ग ग)

मां गंगा कासी।
सम्मोहा नासी।

ये दो चरण हुए।

२ रती (स ल ग)

सुलगै-रती।

---

१ बकी। २ पृथ्वी।

३ नायक (स ल ल)

सुललायक।

वहिनायक।

ये दो चरण हुए।

४ हारी (त ग ग)

तो गौ गुहारी।

इसे हारीत भी कहते हैं।

५ यशोदा (ज ग ग)

जगौ गुपाला।

कहै यशोदा।

ये दो चरण हुए।

६ पंक्ती (भ ग ग)

'भा ग ग' पंक्ती।

इसे हंस भी कहते हैं।

७ करता (न ल म)

नलगु मता।

भजु करता।

ये दो चरण हुए।

८ यमक (न ल ल)

'न ल ल' जहँ।

यमक तहँ।

ये दो चरण हुए।

६ वर्णों के वृत्त

१ विद्युल्लेखा (म म)

मो मैं-विद्युल्लेखा।

इसे शेष राज भी कहते हैं।

२ सोमराजी (य य)

यंयू-सोमराजी।[1]

इसे शंखनारी भी कहते हैं।

३ विमोहा (र र)

क्यों विमोहा-ररौ।

इसे विज्जोहा भी कहते हैं।

४ तिलका (स स)

ससि को तिलका।

इसे तिल्लना भी कहते हैं।

५ मन्थान (त त)

तत्ताहि मंथान।

६ तनुमध्या (त य)

तीये तनुमध्या।

इसे चौरस भी कहते हैं।

७ वसुमती (त स)

तोसी-वसुमती।

१ मेघाश्व।

८ मालती (ज ज)

जु जोहिं न अन्य।
सु मालति धन्य।

ये दो चरण हुए।

९ अपरभा (ज स)

जसै अपरभा ।

१० अम्बा (भ म)

भूमिहि है अम्बा।

११ शशिवदना (न य)

शशिवदना 'न्या'।

७ वर्णों के वृत्त

१ शिष्या (म म ग)

मां मांगे है ये शिष्या।

इसे शीर्षरूपक भी कहते हैं।

२ मदलेखा (म स ग)

मो संगी-मदलेखा।

३ समानिका (र ज ग)

रोजगा-समानिका।

४ हंसमाला (स र ग)

सुर-गा-हंसमाला।

५ भक्ती (त य ग)

तो योगहि में भक्ती।

६ सूर (त म ल)

तो मोल-जानै सूर।

७ कुमारललिता (ज स ग)

जु संग अबला है।
कुमार ललिता है।

ये दो चरण हुए।

८ लीला (भ त ग)

भूताग[1]-लीलालखो।

९ तपी (भ भ ग)

भो भगवान तपी।

१० सवासन (न ज ल)

नजल-सवासन ।

इसे सुवास भी कहते हैं।

११ करहंस (न स ल)

न सिल-करहंस ।

१२ मधुमती (न न ग)

न नग-मधुमती ।

८ वर्णों के वृत्त

१ विद्युन्माला (ममगग)४,४

मोमें गंगा विद्युन्माला।

इसी के दुगुने को रूपा कहते हैं।

२ वापी (म य ग ल) ४, ४

मायागैल, वापी सोह।

३ लक्ष्मी (र र ग ल)

रे रँगीली सुलच्मीहि।

---

१ तागि—भ्रमणकर ।

४ मल्लिका (र ज ग ल)

राजगैल्ल मल्लिकानि।

५ वितान (स भ ग ग)

सुभगंगाहि विताना।

६ ईश (स ज ग ग)

सजि गंग ईश ध्यावौ ।

७ नराचिका (त र ल ग)

तोरी लगै नराचिका ।

८ रामा (त य ल ल)

तू या ललि रामा कहु ।

९ प्रमाणिका (ज र ल ग)

जरा लगा-प्रमाणिका ।

इसे नगस्वरूपिणी भी कहते हैं ।

१० विपुला (भ र ल ल) ४, ४

है विपुला-भरी ललि ।

११ चित्रपदा (भ भ ग ग)

चित्रपदा 'भ भ गा गा'।

१२ माणवकं (भ त ल ग) ४, ४

भूतल गो माणवकं ।

१३ तुंग (न न ग ग)

न नग गुनहु तुंगा ।

इसे तुरंगम भी कहते हैं ।

---

१ चमेली । २ पृथ्वी ।

१४ गजगती (न भ ल ग)

न भल गा गजगती।

१५ पद्म (न स ल ग)

निसि लगत पद्म हूं।

१६ श्लोक अनुष्टुप्

जामें पंचल षट् गुरू, सतौला सम पाद को। श्लोक अनुष्टुपै सोई, नेम ना जहँ आनको।

६ वर्णों के वृत्त।

१ रलका (म स स)

मो सों संकित है रलका[२]।

इसे रत्नकरा भी कहते हैं।

२ पाईता (म भ स)

पाईता है जहँ 'म भ सा'।

इसे पवित्रा और पादाताली भी कहते हैं।

३ हलमुखी (र न स) ३, ६

रैन सी, वह हलमुखी।

४ महालक्ष्मी (र र र)

रात्रि ध्यावौ महालच्मी।

५ भद्रिका (र न र)

रैन रंध्र नाहिं भद्रिका।

---

१ स्तुति। २ हरिण।

६ भुजंगसंगता (स ज र)

सजरी-भुजंग संगता ।

७ भुवाल (ज य य)

जियै यह नीको भुवाला ।

८ मणिमध्या (भ म स)

है मणिमध्या भूमिसही ।

९ शुभोदर (भ भ भ)

भो गुण-वंत शुभोदर ।

१० निवास (भ य य)

भाय यह तेरो निवासा ।

११ सारंगिक (न य स)

नय सुख सारंगिक है ।

१२ बिम्ब (न स य)

न सिय-प्रतिबिम्ब पैये ।

१३ रतिपद (न न स)

न निसि-रति पद सजौ ।

इसे कमला भी कहते हैं ।

१४ कामना (न त र) ६, ३

नतरु ही जान, कामना ।

१५ भुजगशिशुसुता (न न म) ७, २

भुजगशिशुसुता, ओमी ।

१६ अमी (न ज य)

निज यश गान अमी सो ।

१७ श्याम (न य य)

नंय यहि श्यामै रिझैये।

१० वर्णों के वृत्त।

१ पणव (म न य ग) ५, ५

मानौ ये गति, पणवै नीकी।

२ हंसी (म भ न ग)

जानो हंसी 'म भ न ग' जहां।

३ शुद्धविराट (म स ज ग)

मो सों जोग-विराट धारिये।

४ मत्ता (म भ स ग) ४, ६

मो भा संगा, ब्रज तिय मत्ता।

५ मयूरी (र ज र ग)

रोज रंग सों नचै मयूरी।

इसे मयूर सारिणी भी कहते हैं।

६ कामदा (र य ज ग) ५, ५

रायजू गहौ, मूर्ति कामदा।

७ बाला (र र र ग)

रोरि रंगे-धरे मंजु बाला।

८ संयुत (स ज ज ग)

सजि जोग-संयुत जानिये।

९ कीर्ति (स स स ग)

ससि सी गुन कीर्ति किशोरी।

१ नीति।

१० धरणी (त र स ग) ४, ६

तेरी सगी, नहीं धरणी है।

११ सेवा (त र स ल)

सेवा दरिद्र को तिरसूल।

१२ उपस्थिता (त ज ज ग) २, ८

तू जो, जगदंब उपस्थिता।

१३ वामा (त य भ ग) २, ८

तू यों, भगु वामा तें सरला।

१४ चम्पकमाला (भ म स ग) ५, ५

भूमि सुगंधा, चम्पक माला।

इसे रुक्मवती भी कहते हैं।

१५ सारवती (भ भ भ ग)

भाभि भगी वह सारवती।

इसे हाकली भी कहते हैं।

१६ दीपकमाला (भ म ज ग)

दीपकमाला है "भमौ जगौ" ।[१]

१७ पावक (भ म भ ग)

भीम भगै क्यों जो पावक है।

१८ विंदु (भ भ म ग) ६, ४

विंदु सुधा रस, भाभी मांगे।

१ पाठान्तर—दीपकमाला भूमि जागती। यात स्वच्छानुकूल कहीं ६, ४ और कहीं ५, ५ पर होती है। किसी एक यति का निर्वाह करना ठीक है।

१९ मनोरमा (न र ज ग) ६, ४

निरुज गोपिका, मनोरमा।

२० त्वरितगतिः (न ज न ग) ५, ५

नजु नग पै, त्वरितगती।

इसे अमृतगति भी कहते हैं।

११ वर्णों के वृत्त।

१ माली (म म म ग ग) ५, ६

मा मा मा गा गा, साजौ वृत्तै माली।

यदि ८, ३ पर यति हो तो इसी का नाम श्रद्धा होगा। यथा—

मांमो में गंगा की श्रद्धा, बाढ़ैरी।

२ भारती (म म य ल ग) ६, ५

मो-माया लागै ना, भजो भारती।

३ शालिनी (म त त ग ग) ४, ७

मोता तू गा, गीत हूं शालिनी की।[१]

४ भ्रमरविलसिता (म भ न ल ग) ४, ७

मो भा न लगा, भ्रमर विलसिता।

५ वातोर्म्मि (म भ त ग ग) ४, ७

मो भांती गो, गहि वातोर्म्मि[२] जानो।

वातोर्म्मि और शालिनी के मेल को द्विज कहते हैं।

६ माता (म न न ग ग) ५, ६

माता प्रेमहिं, मनु नग गावैं।

१ शालिनी और इन्द्रवज्रा के संयोग को मुक्ति कहते है। २ पवन तरंग।

७ मयतनया (ग स न ल ग) ६, ५

मो सों ना लगरी, मय तनया।

८ भुजंगी (य य य ल ग)

य तीनों लगा के भुजंगी रचो।

९ शाली (र त त ग ग) ४, ७

रात तू गा, गीतरे भाग्य शाली।

१० रथोद्धता (र न र ल ग)

है रथोद्धतहि[1] रैन री लगी।

११ स्वागता (र न भ ग ग)

स्वागतार्थ उठ- रे नभ गंगा।

१२ द्रुता (र ज स ल ग) ५, ६

राज सों लगो, बिसरना द्रुता।

१३ श्येनिका (र ज र ल ग)

रे जरा लगी जु काल श्येनिका[2]।

१४ सायक (स भ त ल ग)

सुभ तैं ले गुण जो सायक में।

१५ उपचित्र (स स स ल ग) ६, ५

उपचित्र यहै, ससि सो लगो।

१६ हित (स न य ग ग) ५, ६

हितकारिणि, सुनिये गंगा है।

१७ विध्वंक माला (त त त ग ग) ६, ५

तू तात गा गाथ, विध्वंक माला।

इसे ग्राहि भी कहते है।

---

१ रथ मे उडी हुई धूलि। २ पक्षी विशेष।

१८ इन्द्रवज्रा (त त ज ग ग)

ता ता जगो गोकुल इंद्रवज्रा ।

१६ उपेन्द्रवज्रा (ज त ज ग ग)

जती जगैं गाय उपेन्द्रवज्रा ।

२० उपजाति

उपेन्द्रवज्रा अरु इन्द्रवज्रा ।

दोऊ जहां हैं उपजाति जानो ।

२१ मोटनकं (त ज ज ल ग)

है मोटनकाहि तजै जु लगी ।

२२ चपला (त भ ज ल ग)

तू भाजि लोग-लखि हैं चपला ।

२३ विलासिनी (ज र ज ग ग)

जरा जगौ गुनौ विलासिनी है ।

२४ हारिणी (ज ज ज ल ग)

जतीन लगी-प्रिय ये हरिणी ।

२५ उपस्थित (ज स त ग ग) ६, ५

उपस्थित सदा, जो सोत गंगा ।

इसे शिखंडिन भी कहते हैं ।

२६ अनुकूला (भ त न ग ग) ५, ६

भीति न गंगा, जहँ अनुकूला ।

२७ दोधक (भ भ भ ग ग)

भाभि भगी गहि दोधंक नीको ।

---

१ बछड़ा ।

२८ सांद्रपद (भ त न ग ल)

सांद्र पदै-भांतिन गल हार ।

२९ कली (भ भ भ ल ग)

भाभि भली गुन चंपक कली ।

३० सुमुखी (न ज ज ल ग)

निज जल गौहिं भरै सुमुखी ।

३१ वृत्ता (न न स ग ग) ४, ७

न ! न ! सँग, गागिकन हो वृत्ता ।

३२ दमनक (न न न ल ग)

न गुण लगत दमनक है ।

३३ इंदिरा (न र र ल ग) ६, ५

वदत इंदिरा, नीर री लगा ।

इसे कनकमंजरी भी कहते हैं ।

३४ अनवसिता (न य भ ग ग)

अनवसिता क्यों-नाय भगैगी ।

३५ सुभद्रिका (न न र ल ग)

न नर लगहि है सुभद्रिका ।

३६ बाधाहारी (न ज य ग ग) ७, ४

निज युग गुंठन, बाधाहारी ।

३७ रथपद (न न स ग ग)

रथपद वहि ननु सो गंगा ।

३८ शिवा (न म य ल ग) ४, ७

पद शिवा, सेवौ न माया लगै ।

१२ वर्णों के वृत्त।

१ विद्याधारी (म म म म)

मैं चारौं बंधू गाऊं तौ विद्याधारी।

२ भूमिसुता (म म म स) ८, ४

मो मां मों सों वृत्तै भाखौ, भूमिसुता।

३ वैश्वदेवी (म म य य) ५, ७

मो माया या है, वैश्वदेवी अनूपा।

४ जलधरमाला (म भ स म) ४, ८

मो भासे मों, जलधरमाला ये ही।

५ भुजंगप्रयात (य य य य)

यचौ-युक्त ताता भुजंग-प्रयाता।

भुजंगमयाता को भुजंगप्रयाता पढ़ो।

६ शैल (य य य ज)

यंयी याजका[१] क्या करैं जाय शैल।

७ स्रग्विणी (र र र र)

रार री राधिका स्रग्विणी धारना।

८ केहरी (र त म ज)

रात मैं जे केहरी गर्जंत घोर।

९ चंद्रवर्त्म (र न भ स)

चन्द्रवर्त्म लखु रे नभसहिता।

१० तोटक (स स स स)

ससि सीस अलंकृत तोटक है।

१ मेधान्ध। २ पुजारी।

११ गिरिधारी (स न य म)

सुनिये सखि गिरिधारी बतियां ।

१२ प्रमिताक्षरा (स ज स स)

प्रमिताक्षराहि सुजसी सब में ।

१३ सारंग (त त त त)

तू तो तितै-बाल ना छेड़ सारंग ।

इसे मैनावली भी कहते हैं ।

१४ बनमाली (त भ त भ)

तू-भा-तभी बनमाली भजै जब ।

१५ इंद्रवंशा (त त ज र)

है इन्द्रवंशा जहँ तात जोर है ।

१६ मणिमाला (त य त य) ६, ६

तूयों तय देही, जैसे मणिमाला ।

१७ सुरसरि (त न भ स)

छाई सुरसरि-तू नभ सुख सों ।

१८ ललिता (त भ ज र)

तैं भाजि रंच ललिता न जा कहूं ।

१६ गौरी (त ज ज ग)

तो जो जय-विश्व चहै भजु गौरी ।

२० वाहिनी (त म म य) ७, ५

हैं वाहिनी हे बंधू, तो मो मया ही ।

३२ पवन (भ त न स) ५, ७

भा-तन-सो है, पवनतनय की।

३३ मदनारी (भ स न य) ६, ६

भूसन[1] यहि है, अहि मदनारी[2]।

३४ तामरस (न ज ज य)

निज जय काहिन तामरसै[3] सो।

३५ सुंदरी (न भ भ र)

नभ भरी-विधु भासन सुन्दरी।

इसे द्रुतविलंबित भी कहते हैं।

३६ मंदाकिनी (न न र र) ८, ४

न नर रटत काह, मन्दाकिनी।

इसे प्रभा, चंचलाक्षिका और प्रमुदित वदना भी कहते हैं।

३७ ललित (न न म र)

ललित 'ननमरे' श्यामै ध्यावरे।

३८ कुसुमविचित्रा (न य न य) ६, ६

नय नय धारौ, कुसुमविचित्रा।

३९ मालती (न ज ज र) ७, ५

निज जर बंधन, जान मालती।

इसे यमुना भी कहते हैं। यदि ६, ६ पर यति हो तो इसी को 'वरतनु' कहेंगे।

४० पुट (न न म य) ८, ४

'न न म य' पुट कीजे, हे सुजाना।

[1] भूषण। [2] मदन+अरि=मदनारी=महादेव। [3] कमल, सुवर्ण।

४१ प्रियंवदा (न भ ज र) ४, ४, ४

न भजु रे, किमि सिया, प्रियंवदा।

४२ द्रुतपद (न भ न य)

द्रुतपदे नभनिय बिन सोचे।

४३ नवमालिनी (न ज भ य) ८, ४

पद नवमालिनी हुं, निज भायो।

४४ निवास (न न र ज)

न नर जपत क्यों रमा निवास।

४५ रमेश (न य न ज)

नयन जु देखो चरित रमेश।

४६ उज्वला (न न भ र) ७, ५

न नभ रह सदा, निसि उज्वला।

४७ नभ (न य स स)

नय ससि को दूज लखे नभ में।

४८ श्रीपद (न त ज य) ४, ८

न तजिये, श्रीपद पद्म प्रभू के।

४९ मानस (न य भ स) ६, ६

जहँ नय भासै, मानस कहिये।

५० सुमति (न र न य)

सुमति धारि कै निरनय कीजे।

५१ राधारमण (न न म स)

न नम सुघर क्यों राधारमणा।

५२ वामना (न स ज र)

छल कपट वासना-न साज रे ।

५३ (साधु न स त, ज) ७, ५

नसति जड़बाधा, संगति सांधु ।

५४ तारिणी (न स य म)

कहुँ अधम तारिणी ना सिय सी ।

५५ तरल नयन (न न न न) ६, ६

नचहु घरिक, तरल नयन ।

१३ वर्णों के वृत्त ।

१ माया (म त य स ग) ४, ६

माता या सों, गा कछु जोगी किय माया ।

इसे मत्तमयूर भी कहते हैं ।

२ प्रहर्षिणी (म न ज र ग) ३, १०

मानो जू, रँग महलों प्रहर्षिणी है ।

३ कंदुक (य य य य ग)

यचौ गाइकै श्यामकी कंदुकी क्रीड़ा ।

४ कन्द (य य य य ल)

यचौ लाइकै-चित्त आनंद कंदाहि ।

५ चंचरीकावली (य म र र ग) ६, ७

यमौर-रागौ क्यों, चंचरीकावली ज्यों ।

६ सुरेन्द्र (य म न न ग) ५, ८

सुरेन्द्रै लेखौ, यामुन नग जहँवां ।

७ राधा (र त म य ग) ८, ५

रेतु माया गोपिनाथा, ध्याय ले राधा ।

८ राग (र ज र ज ग)

रे जरा जगौ-सुमीत राग गावरे।

९ तारक (स स स स ग)

ससि सीस गहे स्वइ तारक भारी।

१० मंजुभाषिणी (स ज स ज ग)

सजि साज गौरि वद मंजुभाषिणी।

इसे कनकप्रभा, सुनंदिनी और प्रबोधिता भी कहते हैं।

११ कलहंस (स ज स स ग)

सज सीस गौरि कलहंस गतीसी।

इसे नंदिनी, सिंहनी और कुटजा भी कहते है

१२ प्रभावती (त भ स ज ग) ४, ९

ती-भास-जो, गुण सहिता प्रभावती।

१३ त्राता (त य य म ग) ६, ७

तू या यम गावै, नगावै काहे त्राता।

१४ रुचिरा (ज भ स ज ग) ४, ९

जु भास जी, गहि रुचिरा सँवारिये।

१५ कंजअवलि (भ न ज ज ल)

कंज अवलि खिल-भानुज जो लखि।

इसे पंकजअवलि, पंकावली और एकावलि भी कहते हैं।

१६ चण्डी (न न स स ग)

न नसु सिगरि भजखे नर चण्डी।

१७ चंद्ररेखा (न स र र ग) ६, ७

निसि रुरुगता, जानिये चंद्ररेखा ।

१८ चन्द्रिका (न न त त ग) ७, ६

'ननततग' युता, शोभती चंद्रिका ।

इसका नाम उत्पलिनी, विद्युत् और कुटिल-गति भी पाया जाता है ।

१९ मृगेन्द्रमुख (न ज ज र ग)

परत मृगेन्द्र मुखै-नजाजु रोगी ।

२० पुष्पमाला (न न र र ग) ९, ४

न नर रँगाहिं मानिये, पुष्पमाला ।

२१ क्षमा (न न ज त ग)

ननु[2] जित गरब-साधु धारैं क्षमा ।

कहीं२ इसका लक्षण न न त त ग भी कहा है परन्तु देखो १८वां वृत्त चंद्रिका । यति पादांत में है, कोई कोई ७, ६ पर भी रखते हैं ।

१४ वर्णों के वृत्त ।

१ वासन्ती (म त न म ग ग) ६, ८

माता नौ मैं गंग, सरस राजै वासन्ती ।

इसका लक्षण कहीं म त न य ग ग भी देखा जाता है ।

२ असम्बाधा (म त न स ग ग) ५, ९

माता नासौगी, गहन भव असम्बाधा ।

१ रुरु=हरिणी । २ ननु=निश्चय ।

३ मध्यक्षामा (म भ न य ग ग) ४, १०

मो भा नाये, गगरि धरत मध्य क्षामा।

४ लोला (म स म भ ग ग) ७, ७

माँ! सोमौ भगुगोरी, देखे आनन लोला।

५ चंद्रौरसा (म भ न य ल ग)

मो भौने या लगत सुघर चंद्रौरसा।

६ रेवा (म स त न ग ग)

माँ सातौ नग गावैं कीरति तुव रेवा।

इसका नाम लक्ष्मी भी पाया जाता है परंतु लक्ष्मी नामक अन्य वृत्त भी है।

७ कुटिल (स भ न य ग ग) ४, १०

सुभ नाये, गगन कुटिल ध्यावौ रामा।

८ मंजरी (स ज स य ल ग) ५, ६

सजि सीय लै गवनि ज्यों सखी मंजरी।

इसे वसुधा और पथा भी कहते हैं।

९ मनोरम (स स स स ल ल)

ससि सीस लखा-अवलोक मनोरम।

१० मंगली (स स ज र ल ग) ३, ६, ५

ससि जो, रल गंत होत, वृत्त मंगली।

११ प्रतिभा (स भ त न ग ग) ८, ६

प्रतिभा है कवि मांही, सुभ-तन-गंगा।

१ चन्द्र+औरस=बुध।

१२ वसंततिलका (त भ ज ज ग ग) ८, ६

जानो वसंत तिलका, 'तुभजौ जगौ गा'।

इसे उद्धर्षिणी और सिंहोन्नता भी कहते हैं।

१३ मुकुंद (त भ ज ज ग ल) ८, ६

तैं भोज जोग लहि के, भजले मुकुन्द।

१४ अनंद (ज र ज र ल ग)

जरा जरा लगाय चित्त ले अनन्द तू।

१५ इन्दुवदना (भ ज स न ग ग)

भौजि सुनु गंग छबि इंदु वदना सी।

१६ चक्र (भ न न न ल ग) ७, ७

चक्रहिं रच कवि, 'भ न न न ल ग' सों।

१७ अपराजिता (न न र स ल ग) ७, ७

न निरस लगती, कथा अपराजिता।

१८ प्रहरणकलिका (न न भ न ल ग) ७, ७

ननु भन लग है, प्रहरण कलिका।[१]

१९ नान्दीमुखी (न न त त ग ग) ७, ७

न नित तगि गहौ, रीति नांदीमुखी की।

२० कुमारी (न ज भ ज ग ग) ८, ६

नजु भज गंग काह, नितही कुमारी।

२१ ललित केसर (न र न र ल ग)

ललित केसरै सखि-नरैन री लगा।

इसका नाम कहीं केसर भी पाया जाता है परन्तु १८ वर्णों के वृत्तों में भी एक वृत्त केसर नामक है।

१ कहींर पादांत मे यति पाई जाती है। २ भटक कर।

२२ प्रमदा (न ज भ ज ल ग)

नजु भज ले गुविंद किमि तू प्रमदा।

२३ सुपवित्रा (न४+ग ग) ८, ६

नचहु गगरि धरि, तिय सुपवित्रा।

२४ नदी (न न त ज ग ग) ७, ७

न! न! तजि गगरी, जावहुरी नदी में।

१५ वर्णों के वृत्त।

१ सारंगी (म म म म म) ८, ७

मो प्राणों की संगी प्यारी, मीठी बाजै सारंगी।

इसे काम क्रीड़ा भी कहते है। जहां यति पादांत में वा स्वेच्छानुकूल तो वहां इसे लीला खेल कहते हैं।

२ चित्रा (म म म य य) ८, ७

मे। मो माया याही जानो, पार नाहीं विचित्रा।

३ चन्द्रलेखा (म र म य य) ७, ८

मैं री मैया यही तो, ल्यौं चन्द्रलेखा खिलौना।

४ धाम (म त ज त ज) ५, १०

माताजी-तीजा, व्रत में पधारो मम धाम।

५ चामर (र ज र ज र)

रोज रोज राधिका सु चामरै डुलावहीं।

इसे तूण और सोमवल्लरी भी कहते हैं।

६ सीता (र त म य र)

रे तु माया रंचहूं जानी न सीताराम की।

७ चंद्रकांता (र र म स य) ७, ८

रार मोसों यही है, त्यागै किन चंद्रकांता।

८ मनहंस (स ज ज भ र)

सज जीभरी-मनहंस वृत्तहिं गान कै।

९ एला (स ज न न य) ५, १०

सजनी नयों अपतहिं वितरिय एला[1]।

१० नलिनी (स स स स स)

ससि सीस सखी लखि फूल रहीं नलिनी।

इसे भ्रमरावली और मनहरण भी कहते हैं।

११ ऋषभ (स य स स य) ६, ६

ऋषभै बखानौ जहँ पै, सियसी सिया है।

इस वृत्त का लक्षण 'स ज स स य' भी कहा है।

यथा-ऋषभै बखान जहँ पै, सुजसी सिया है।

१२ मोहिनि (स भ त य स) ७, ८

सुभ तो ये सखिरी, नागरिही मोहिनि है।

इस वृत्त के आदि में कोई कोई रगण का भी प्रयोग करते हैं।

१३ मंगल (स भ त ज य) ७, ८

सुभ तीजा यहतो, मंगल नारि मनावैं।

१४ कुंज (त ज र स र) ८, ७

तू जा-रस रूप पुंज. कुंज जहां श्याम-री।

1 एला=इलायची।

१५ निशिपाल (भ ज स न र)

भोज सुन राघवहिं द्यौस निशिपाल है।

१६ पावन (भ न ज ज स) ८, ७

भानुज जस-कहिये, अति पावन न में।

१७ भाम (भं म स स स) ६, ६

भाम[1] ससी सो हैं नभ में, सुख सौं नितही।

१८ निश्चल (भ त न म त) ५, ६, ४

[2]निश्चल एका, भितन मतेका, जानो धीर।

१९ दीपक (भ त न त य) १०. ५

दीपक साजैं निज घरके, भांतिन-ती-ये।

२० शशिकला (न न न न म) ६, ९

नचहु-सुघर, तिय मनहुं शशिकला।

इसे शरभ, चंद्रवर्त्ता और स्रग भी कहते हैं। यति ८, ७ पर होतो यही वृत्त 'मणिगुण निकर' कहा जायगा।

२१ मालिनी (न न म य य) ८, ७

न नमिय यहि काहे, मालिनी मूर्ति धन्या।

२२ विपिन तिलका (न स न र र) ६, ९

विपिन-तिलका, रचत कौन सी नागरी।

यति निर्धारित नहीं परन्तु ६, ९ पर ठीक प्रतीत होती है।

१ भाम=सूर्य। २ बनमाला।

२३ प्रभद्रिका (न ज भ ज र)

न जु भज राघवेंद्र जगना प्रभद्रिका।

इसे सुखेलक भी कहते हैं।

२४ उपमालिनी (न न त भ र) ८, ७

न नित भर छटा सों, अटा उपमालिनी।

१६ वर्णों के वृत्त।

१ मदन ललिता (म भ न म न ग) ४, ६, ६

साजौ वृत्तै, मदन ललिता,
'मा भा न म न गा'।

२ प्रवरललिता (य म न स र ग) ६, १०

यमी नासै रागा, प्रवरललिता घोर माया।

३ चञ्चला (र ज र ज र ल)

री जरा जुरो लखो जु चंचला गई पराय।

४ पंचचामर (ज र ज र ज ग)

जु रोज रोज गोप तीय ढार पंच चामरै।

इसे नाराच और नागराज भी कहते हैं।

५ रसाल (ज स त य र ल) ७, ९

रसाल वहि लेखौ, जो सत यारी
लै निबाह।

६ घनश्याम (ज ज भ भ भ ग) ६, १०

लखे घनश्याम, डोलत कुंज जु
भाभि भगी।

७ धीर ललिता (भ र न र न ग)

भोर नरा न गावत कहा जु धीर ललिता ।

८ नील (भ भ भ भ भ ग)

भा शिव आनन गौरि अचंभित नील लखी ।

इसे विशेषक और विश्वगति भी कहते हैं ।

९ चकिता (भ स म त न ग) ८, ८

भो सुमति न गोविंदै, पैये बुद्धि जु चकिता ।

१० वरयुवती (भ र य न न ग) ९, ७

भोरिय नैन गात्र युक्ता, वहि वर युवती ।

११ ऋषभ गजविलसिता (भ र न न न ग) ७, ९

भीरु न नैन गोपि, ऋषभ गज विलसिता।

१२ वाणिनी (न ज भ ज र ग)

न जु भज राग सों नर लहै न वाणिनी को।

१३ गरुड़रुत (न ज भ ज त ग)

गरुड़ रुतै[1] न जो भजत, गान सो भाज क्यों ?

१४ मणिकल्पलता (न ज र भ भ ग) १०, ६

नजु रंभ[2] भागवंत सोई, मणि कल्पलता ।

१५ अचलधृति (न न न न न ल)

न शिव वदन लखि रहत अचल धृति ।

१ रुत=आवाज । २ रंभ=आकांक्षा करना ।

१७ वर्णों के वृत्त

१ मन्दाक्रांता (म भ न त त ग ग) ४, ६, ७

मन्दाक्रान्ता, म भ न त त गा, गाइये धीर धारे।

२ मंजारी (म म भ त य ग ग) ६, ८

मींमीं भांती-या-गा गा कर, घूमै घर में मंजारी।

३ भाराक्रांता (म भ न र स ल ग) ४, ६, ७

भाराक्रान्ता, म भ न र स ला, गहौ मन लायकै।

४ हारिणी (म भ न म य ल ग) ४, ६, ७

मो भौंने माँ, यु ल ग सु भ गा, देवी मनोहारिणी।

५ शिखरिणी (य म न स भ ल ग) ६, ११

यमी[१] ना-सो भूला, गुण गणनि गागा शिखरिणी।

६ कांता (य भ न र स ल ग) ४, ६, ७

वहै कांता[२], जहँ लसत हैं, 'यभैनरसा लगा'।

७ सारिका (स५+ल ग) १०, ७

सुगती लग रामहिं राम, रटै नित सारिका।

१ यमी=इंद्रिय निग्रह करनेवाला। २ सुन्दर स्त्री।

८ अतिशायिनी (स स ज भ ज ग ग) १०, ७

सु सजे भज गंग क्यों नहीं, तु अति-
शायिनी है।

९ तरंग (स म स म म ग ग ५, ५, ७

शिव के संगा, सोह तरंगा, सीमा
सीमा में गंगा।

१० पृथ्वी (ज स ज स य ल ग) ८, ६

जु साज सिय लै गई, जगत मातु
पृथ्वी सुता।

११ वंशपत्रपतिता (भ र न भ न ल ग) १०, ७

सा जिय वंश पत्र पतिता, 'भरनभनलगा'।

१२ शूर (भ म स त य ग ल) ५, ५, ७

भूमि सताये, गाल बजाये, कौन
कहायो शूर।

१३ हरिणी (न स म र स ल ग) ६, ४, ७

न सुमिरि सुली[1], गावौ काहे, वृथा
हरिणी कथा।

१४ मालाधर (न स ज स य ल ग) ६, ८

न-सज-सिय लागि जो न, छिन मंत्र
माला धरे।[2]

---

१ सुली=शूली, महादेव। २ किसीर ने ८, ९ पर यति मानी है यथा—न सज सिय लागिना, छिन जु मंत्र माला धरे।

१५ कोकिल (न ज भ ज ज ल ग) ७, ६, ४

न जु भज जो लगो, मधु[1] भलो रव, कोकिल को।

१६ रमना (न य स न न ल ग) ७, १०

नय[2] सन ना लाग, तबै कहत कवि रसना।

१८ वर्णों के वृत्त।

१ हरिणप्लुता (म स ज ज भ र) ८, ५, ५

मैं साजो जु भरो-घड़ा, तट में लख्यो, हरिणाप्लुता।

२ कुसमित लतावेल्लिता (म त न य य य) ५, ६, ७

माता ना यत्रै, कुसमित लता, वेल्लिता मान सांची।

३ चित्रलेखा (म भ न य य य) ४, ७, ७

मैं भीनी यों, गुणानि-तुव पती, ध्यान दै चित्रलेखा।

४ शार्दूल ललिता (म स ज स त स) १२, ६

मो सों जो सुत सांच पूछत कहौं, शार्दूल ललिता।

५ केसर (म भ न य र र) ४, ७, ७

मो भा नाये, ररहु कित वृथा, धारो सदा केसरै।

१ चैत्र। २ नीति।

६ मञ्जीर (म म भ म स म) ६, ६

मोमें भूमें सो मो-पालक, गाऊं ताहि बजा मंजीरा।

७ चला (म भ न ज भ र) ४, ७, ७

मो भौने जो, भरहि धन सदा, कहौ तिहि क्यों चला।

८ सिंहविस्फूर्जिता (म म भ म य य) ५, ६, ७

मोमा भीमा या, युद्धे चढ़ि धावै, सिंह विस्फूर्जिता सी।

९ शार्दूल (म स ज स र म) १२, ६

मो सों जो सर में प्रवीण लखिये, वीर सो शार्दूलै।

१० महामोदकारी (य६)

यगन्ना छहौ यत्र एकत्र देखौ त्रही मोदकारी।

११ सुधा (य म न स त स) ६, ६, ६

यमी ना संतों से, पिय नित हरी, नामा वलि सुधा।

१२ चंचरी (र स ज ज भ र) ८, १०

री सजै जु भरी-हरी, गुण चंचरी वत वानि तू।

इसे विबुधप्रिया और हरनर्तन भी कहते हैं।

१ लक्ष्मी।

१३ केतकी (स स स ज न र) १०, ८

ससि सों जनु रीझ न रंच, सेवत
अलि केतकी ।

१४ शारद (त भ र म ज ज) ९, ९

सो शारदा पद जानिये, पटुता भरी
मज जाहि ।

१५ लालसा (त न र र र ग) ९, ९

तूनीर[1] चतुर-बांधहीं, युद्ध की है जिन्हें
लालसा ।

१६ अचल (ज त भ य स त) ५, ६, ७

जती भयो सो, तपै अचल पै, त्यागि
सबै जंजाल ।

१७ हीर (भ स न ज न र) १०, ८

भूसन[2] जनु रंक मुदित, पाय ललित
हीरहीं ।

१८ तीव्र (भ५+स)

भू गति सोधत पंडित जो बहु तीव्र
गणित में ।

इसका नाम अश्वगति भी पाया जाता है परंतु
१६ वर्णों के वृत्तों में भी एक वृत्त अश्व-
गति नामक है ।

१ तरकश । २ भू-सन=पृथ्वी मे-पाठान्तर भूषण ।

१९ भ्रमरपदक (भ र न न न स) ६, १२

भीरु न नैन से, भ्रमर पदक तउ गर परे ।

२० नंदन (न ज भ ज र र) ११, ७

न जु भज रोरि-फूल फल सों, कहा रघूनन्दना ।

२१ अनुराग (न ज ज न त ज) ८, १०

निज जनता जँह है, प्रगट तहां हीं अनुराग ।

२२ प्रज्ञा (न य म म भ म) ६, ४, ८

नय मम भीमा, प्रज्ञा सीमा, ताही ना छिन छांड़ौ जू ।

२३ लता (न न र भ र र) १०, ८

न निरभर रहे असींचे, वर काव्य की ये लता ।

२४ मान (न र स म न म) १०, ८

नर समान मोहन नाहीं, तू मान तज री प्यारी ।

२५ नाराच-(न न र र र र) ९, ९

न नर चतुर-भूल तू, गाव नाराचधारी सदा ।

इसे महामालिका भी कहते हैं ।

१९ वर्णों के वृत्त

१ शार्दूल विक्रीड़ितं (म स ज स त त ग) १२, ७

मो सौं जे सत-ते-गहैं सुरचना, शार्दूल विक्रीड़ितं ।

२ फुल्लदाम (म त न स र र ग) ५, ७, ७

मो तो नासौ रे, रँगहु हिय प्रभू, नाम की फुल्लदामै ।

३ बिम्ब (म त न स त त ग) ५, ७, ७

बिम्बा वाही है, म त न स त त गा, युक्ता जहां पाइये ।

४ सुमधुरा (म र भ न म न ग) ७, ६, ६

मोरे भौने मनोग्यां[1], वदति रमणी, वाणी सुमधुरा ।

५ सुरसा (म र भ न य न ग) ७, ७, ५

मोरे-भै-नाय-नागी, हरि अनुचर हों, जान सुरसा ।

६ मेघविस्फूर्जिता (य म न स र र ग) ६, ६, ७

यमूनासौरी[2] री, गुनत हुलसे, मेघ विस्फूर्जिता को,

इसे विस्मिता भी कहते हैं ।

---

१ मनोज्ञा । २ सौरि-शौरि-श्रीकृष्ण ।

७ छाया (य म न स त त ग) ६, ६, ७

करौ छाया ऐसी, यमुन सततै, गोविंद ही हौं पती।

८ मकरंदिका (य म न स ज ज ग) ६, ६, ७

यमै ना साजौ जो, गहि कर किये, कहा मकरंदिका।

९ शम्भू (स त य भ म म ग) ५, ७, ७

सत या भूमी, मग शंभू ध्यावहु, सिच्छा मोरी मानो जू।

१० तरल (स न य न य न ग) ६, १०

कहु वृत्त तरल ताही, सुनिय नयो नागहि जहां।

११ मणिमाल (स ज ज भ र स ल) १२, ७

सजि जो भरी सुलखात सुंदर, हीय में मणिमाल।

१२ समुद्रतता (ज स ज स त भ ग) ८, ४, ७

जसी जस तभी गुनौ, रहत जो, छायो समुद्रतता।

२० वर्णों के वृत्त

१ सुवदना (म र भ न य भ ल ग) ७, ७, ६

मो रंभा नाय भूलै, गुण गण अगरी, प्यारी सुवदना।

२ सुवंशा (म र भ न न त ग ग) ७, ६, ७

माँ रंभा नीति तू गा, गहु न कुमती,

रख धर्म्मैं सुवंशा ।

३ शोभा (य म न न त त ग ग) ६, ७, ७

यमी नाना ताना, गगन तल अजौं,

मघ्र जो ब्रह्म शोभा ।

४ वृत्त (र ज र ज र ज ग ल)

रोज रोज राज गैल तैं लिये गुपाल

जात ग्वाल वृत्त ।

इसे दंडिका और गंडका भी कहते है ।

५ गीतिका (स ज ज भ र से ल ग) १२, ८

सज जीभरी सु लगै सुहीं प्रभु,

गीतिकान सुनाय दे ।

६ मत्तेभविक्रीड़ित (स भ र न म य ल ग) १३, ७

सुभरी ना मयि लागती विलसती,

मत्तेभविक्रीड़िता ।

७ सरिता (त य स भ र य ग ल) १०, १०

देखो सरिता सी बहि आई, सखि

तोय[२] सों भरी या गैल ।

८ भृंग (न६+ग ल) ६, ६, ८

नरसगलिन, कुसुमकलिन, जहँन

लसँन भृंग ।

---

१ सुघ्रि=गधी, खबरी । २ तोय-पानी ।

२१ वर्णों के वृत्त।

१ स्रग्धरा (म र भ न य य य) ७, ७, ७

मो रे भौने ययूयो, कहहु सुत अहै,
कौनको स्रग्धरे यों।

२ नरेन्द्र (भ र न न ज ज य) १३, ८

भो रन ना जु जाय कहुं विचलित,
सोइ नरेन्द्र बखानो।

३ धर्म (भ स न ज न भ स) १०, ५, ६

भो-सन जब भास कलित, कीर्ति
ललित, धर्म वलित जो।

४ अहि (भ६+म) १२, ६

भोर समै हरि नाथ लियो अहि, संग
सखा यमुना तीरा।

५ सरसी (न ज भ ज ज ज र) ११, १०

इमि कहु वृत्त मंजु सरसी, नितही-
नजु भाज जा जरा।

इसे पंचकावली भी कहते हैं।

६ हरिहर[1] (न ज भ स न ज ज) ८, ५, ८

हरिहर जो रटैना, ध्यान धरैना, नाजम
सो तज जीव।

---

[1] कांति

२२ वर्णों के वृत्त

१ हंसी (म म त न न न स ग) ८, १४

मैं मो तो ना नाना सोंगै, तज-हरिभज
पिय पय जस हंसी।

२ लालित्य (म स र स त ज न ग) ६, ५, ८

मो सों रोस तजौ नागरी, कहु लालित्यै,
कटु वाक्य परिहरौ।

३ महा स्रग्धरा (स ज त न स र र ग) ८, ७, ७

सज तान सूर रंगी, श्रवण सुखद जो,
ये महा स्रग्धरा की।

४ मंदारमाला (त७+ग)

तू लोक गोविंद जावै नरा नाम मंदार
माला हिये धार ले।

५ मदिरा (भ७+ग)

भासत गूढन मर्म तिन्हैं जु पिये जग
मोह मयी मदिरा।

६ मोद (भ५+म स ग)

भे सर में सिगरे गुण अर्जुन द्रौपदि
ब्याहि लाय समोदा।

७ भद्रक (भ र न र न र न ग) ४, ६, ६, ६

भोर नरा, नरी नग-धरै, हिये जु सुमिरै,
सुभद्र कहिये।

२३ वर्णों के वृत्त

१ मत्ताक्रीड़ा (म म त न न न न ल ग) ८, ५, १०

मत्ताक्रीड़ा सोई जानौ, लसत जहँ,
'मम तननि ननु लग' ही।

२ वागीश्वरी (य७+ल ग)

यचौ राम लागे सदा पाद पद्मै हिये
धारि वागीश्वरी मातको।

३ सुन्दरि (स स भ स त ज ज ल ग) ६, ७, १०

ससि भास तजो, जौं लागि-सखि ढूंढ़ौं,
सुंदरि हाय कहां बिछुरी।

४ सर्वगामी (त७+ग ग)

तैं लोक गंगा, तिहूं ताप भंगा, नमामी
नमामी सदा सर्वगामी।

इसे अश्व भी कहते हैं।

५ सुमुखी (ज७+ल ग)

जु लोक लगा--चित राम भजैं तिनपै
सुप्रसन्न सिया सुमुखी।

इसे मानिनी और मल्लिका भी कहते हैं।

६ मत्तगयन्द (भ७+ग ग)

भासत गंग-न तो सम मो अघ मत्त
गयंदहि नास करैया।

इसे मालती और इंदव भी कहते हैं।

७ चकोर (भ७+ग ल)

भासत ग्वाल-जहां लखिये कहि वृत्त चकोर महा मुद मान।

८ अद्रितनया (न ज भ ज भ ज भ ल ग) ११, १२

नजु भजे भंजु भाल गति को, हिमाद्रि तनैया जरा सुमिरले।

इसे अश्वललित भी कहते हैं।

९ शैलसुता (न, ज६+ल ग) १३, १०

नजरसुलोगन ऊपर कीजिय, हे जग तारिणि शैल सुते।

२४ वर्णों के वृत्त

१ गंगोदक (र८)

रे बसौ धाइके अंत कासीहि के धाम निश्चिंत गंगोदके पान के।

इसे गंगाधर, लक्ष्मी और खंजन भी कहते हैं।

२ दुर्मिल (स८)

सब सों-करि नेह भजो रघुनन्दन दुर्मिल भक्ति सदा लहिये।

इसका नाम कहीं२ चंद्रकल्प भी पाया जाता है।

३ आभार (त८)

तू अष्ठ-जामै जपै राम को नाम भूलै न हे तात आजन्म आभार।

४ मुक्तहरा (ज८)

जु योग बली सुमनो भव मुक्त हरैं
शिवजी तिनके दुख दंद ।

५ वाम (ज७+य)

जु लोक यथा विधि शुद्ध रहैं हरि
वाम तिन्हें सपनेहु कबौं ना ।
इसके अन्य नाम मंजरी, मकरंद और
माधवी भी हैं ।

६ तन्वी (भ त न स भ भ न य) ५, ७, १२

भात न सोभा, भनिय-अशुभ सी, जो
नहिं सेवत निज पति तन्वी[1] ।

७ अरसात (भ७+र)

भा सत रुद्र जु ध्यानिन में तिमि
ध्यान धरौ अरसात न नेकहू ।

८ किरीट (भ८)

भा वसुधा तल पाप महा हरि जू
प्रगटे तव धारि किरीटहिं ।

२५ वर्णों के वृत्त

१ सुंदरी (स८+ग)

सबसों गहि पाणि मिले रघुनंदन
सुंदरि सीय लगी पद सासू ।
इसे मल्ली और सुखदानी भी कहते हैं ।

---

१ पतली कमर वाली स्त्री ।

२ अरविंद (म८+ल)

सबसों लघु आपुहिं जानियजू पद
ध्यान धरे हरि के अरविंद ।

३ लवंग लता (ज८+ल)

जु योग लवंग लतानि लग्यो तब सूझ
परै न कछू घर बाहिर ।

४ क्रौंच (भ म स भ न न न न ग) ५, ५, ८, ७

क्रौंचसुवृत्ता, वाकहँ मानो, भ म स भ
न न न न, गहि जहँ बिलसैं ।

२६ वर्णों के वृत्त

१ भुजंग विजृम्भित (म म त न न न र स ल ग)८, ११, ७

मो मीता नैना नारी सों, लगि सुधिन
गरुड़ लखि ज्यों, भुजंग विजृम्भिता।

२ सुख (स८+ल ल)

सबसों ललुवा मिलिके रहिये मम
जीवन मूरि सदा सुख दायक ।

इति साधारण सम वृत्तानि ।

अथ वर्ण दंडकाः ।

दंडक छब्बिस तें अधिक, साधारण गण संग ।
मुक्तक गिन्ती वरण की, कहुं लघु गुरू प्रसंग ॥

२६ से अधिक वर्णवाले वृत्त दंडक कहाते हैं । इनके दो भेद मुख्य हैं । १ साधारण-जो गण बद्ध हैं २ मुक्तक वा मुक्त जो स्वतन्त्र रूप हैं । इनमें केवल वर्णों की गिनती का प्रमाण है और कहीं कहीं गुरु लघु का नियम होता है ।

अथ साधारण दंडकाः ।

१ मत्त मातंग लीलाकर (२६ वा अधिक)

रानि धीरे धरो आज मार्यो खरो कंस को
मत्त मातंग लीला करी श्याम ने ।

२ कुसुमस्तवक (स९ वा अधिक)

सुरसै गुणवंत पियै नित ज्यों अलि पुंज
सुवृत्त लता कुसुमस्तवकै ।

३ अशोक पुष्प मंजरी (ग ल यथेच्छ)

गौ लिये यथेच्छ या फिरैं गुपाल घाट घाट
ज्यों अशोक पुष्पमंजरी मलिंद ।

४ अनंग शेखर (ल ग यथेच्छ)

लगा सनै अनंगशेखरै सुकौशलेश पाद वेद
रीति रामहीं विवाहि जानकी दई

५ शालू (त+न८+ल ग) १४, १५

शालू तन अहि लग सपनहुँ जु न, हरिपद सर सिज सुमिरण करहीं ।

६ त्रिभंगी (न६+स स भ म स ग) ८, ८, ८, १०

न निसरससि भमि, सगरि लखत सखि, ससि-वदनी ब्रज की, रंगनरंगी श्याम त्रिभंगी ।

अथ मुक्त दंडकाः ।

१ मनहर (कवित्त) १६, १५ अंत गुरु

आठों जाम जोग राग, गुरु पद अनुराग, भक्ति रस प्याय संत, मनहर लेत हैं ।

कवित्त नियमावली ।

आठ आठ आठ पुनि, सात वरग ने साजि, अंत इक गुरु पद, अवसहिं धरि कै । सम सम सम सम, विषम विषम सम, सम विषमहु दोय, प्रति आठ करिकै । दोय विषमानि बीच, सम पद राखियेना, राखे लय नष्ट होत, आतही बिगारिकै । हरि पद धारिकै जु, सुमति सुधारिकै-सो, रचिये कवित इमि, गुरुहिं सुमिरिकै ।

सू०—इसे घनाक्षरी भी कहते हैं ।

२ रूपघनाक्षरी (३२ वर्ण १६, १६) अंत लघु

राम राम राम लोक, नाम है अनूप रूप, घन अच्छरी है भक्ति, भवसिंधु हर जाल ।

३ डमरु (३२ वर्ण १६, १६) सर्व लघु

हर हर सरस रटत नस मल सब, डम डम

डमरु बजत शिव बम बम।

४ कृपाण (३२ वर्ण ८, ८, ८, ८) अंत 'गल'

वर्ण आठ चार बार, अंत 'गल' निरधार,

जुद्ध प्रसंग विचार, वृत्त कहु किरपान।

इस वृत्त के अंत में नकार कर्णमधुर होता है।

५ विजया ३२ वर्ण (८, ८, ८, ८) अंत 'ल ग'

बरण वसु चारिये, चरण प्रति धारिये,

लगन ना बिसारिये, सुविजया सम्हारिये।

६ देव घनाक्षरी (३३ वर्ण ८, ८, ८, ९) अंत ल ल ल

राम योग भक्ति भेव, जानि जपैं महादेव,

घन अच्छरी सी उठै, दामिनी दमकि दमकि।

इति वर्ण दंडकाः तथा वर्ण वृत्तानि समाप्तानि।

अथ अर्द्धसम वृत्तानि ।

विषमविषम समसम चरण, तुल्य अर्द्ध सम वृत्त ।

१ वेगवती

विषम चरण ३स+ग, समचरण ३भ+ग ग)

गिरिजापति मो मन भायो ।
नारद शारद पार न पायो ।
कर जोर अधीन अभागे ।
ठाढ़ भये बरदायक आगे ॥

२ मंजुमाधवी (११ उपजाति+१२ माधव)

तुकान्तहीना उपजाति साथ ।
मिलै जहां माधव द्वादशाक्षरी ।
एकादश द्वादश अक्षरांगी ।
वहां बखानो मति मंजुमाधवी ॥

इति अर्द्धसम वृत्तानि ।

अथ विषम वृत्तानि ।

ना सम, ना पुनि अर्द्धसम, विषम जानिये वृत्त ।

१ मंजरी १२, ८, १६, २० वर्ण ।

सांची अहहिं प्रभु जगत भर्त्ता, रामा असुर
सुहर्त्ता। दनुज कुल अरि जग हित धरम
धर्ता, सरबस तज मन भज नित प्रभु भव
दुख हर्ता।

२ अभंग ८, ८, ८, ८

देवा पायीं नाहीं भाव, भक्ति वरीवरी वाव।
समर्पिला नाहीं जीव, जाणावा हा व्यभिचार।

इसमें न्यूनाधिक वर्ण भी होते हैं, इसकी चाल
मराठी भाषा में है ।

३ ओवी ८, ६, १०, ४

आतां वंदूं कवीश्वर, जे शब्द सृष्टीचे ईश्वर।
नाहीं तरी हे परमेश्वर, वंदावेते ।

इसमें भी न्यूनाधिक वर्ण होते हैं, इसकी चाल
मराठी भाषा में है ।

इति विषमवृत्तानि ।

इति वर्णवृत्त वर्णननाम द्वितीयोऽध्यायः ।

अथ गणित विभागः ।

प्रत्यय ।

सूची पुनि प्रस्तार नष्ट उद्दिष्ट बखानहु ।
पातालहु पुनि मेरु खंड मेरहु पहिचानहु ।
जानि पताका भेद और मर्कटी प्रमानहु ।
नव प्रत्यय ये छंद शास्त्र के हिय महँ आनहु ।
दशम भेद कोउ सूचिको बरणत हैं निज बुद्धि बल ।
मर्कटि अंतर्गत स्वऊ संख्या लघु गुरु की सकल ॥

प्रत्यय गुणावलि ।

सूची संख्या छंद की मत्त बरन कहि देय । (संख्या)
प्रस्तारहिं सो रूप रचि भिन्न भिन्न लखि लेय॥१॥ (सब रूप)
नष्टहु पूछे भेद को रूप रचै ततकाल । (इष्ट रूप)
कहु उदिष्ट रचि रूप की संख्या भेद रसाल॥२॥ (इष्ट संख्या)
पातालहु लघु गुरु सकल एकत्रित दरसाय (लघु गुरु संख्या एकत्रित)
मेरु खंड विस्तार लग*संख्या छंद लखाय॥३॥ (लघु गुरु छंद संख्या)
सजहु पताका गुरुन के, छंद भेद अलगाय । (गुरु भेद)
वर्ण कला लग पिंडहूं*,मर्कटि देत दिखाय॥४॥ (सब संख्या)
सूची औ प्रस्तार पुनि नष्ट और उद्दिष्ट ।
नव प्रत्यय में चारही भानु मते हैं इष्ट ॥५॥ (मुख्य प्रत्यय)

१ सूची ।

(सूची संख्या छंद की मत्त बरण कहि देय)

सूची कल कल पिछली दोय,

इक दो तीन पांच ज्यों होय ।

*ल ग=लघु गुरु, छंद के सम्पूर्ण कलाओ के आधे को पिंड कहते हैं।

दून बरण है चारु आठ,

दोनों सूची कर लो पाठ ॥

टीका–मात्रिक सूची में पिछली दो दो (कल) मात्रा जुड़ती जाती हैं और वर्णिक सूची में आदिही से दूने दूने अंक होते है। यथा :—

अनुक्रम संख्या	१	२	३	४	५	६
मात्रिक सूची	१	२	३	५	८	१३
वर्णिक सूची	२	४	८	१६	३२	६४

इससे यह विदित हुआ कि ६ मात्राओं के भिन्न भिन्न प्रकार से १३ मात्रिक छंद बन सकते हैं। वैसे ही ६ वर्णों के भिन्न२ प्रकार से ६४ वर्णिक छद (वृत्त) बन सकते है। ऐसेही और भी जानिये।

२ प्रस्तार।

(प्रस्तारहिं सों रूप रचि भिन्न२ लखि लेय)

आदि गुरू तर लघु निःसंक,

दायें नक्कल बायें बंक।

बरन बरन कल कल अनुरूप,

भानु भनत प्रस्तार अनूप ॥

टीका–आदि में ही जहां गुरु मिले उसी के नीचे लघु लिखो (गुरु का चिह्न ऽ है और लघु का चिह्न। है) फिर अपनी दाहिनी ओर ऊपर के चिह्नों की नक्कल उतारो। बाईं ओर

जितने स्थान खाली हो (क्रम पूर्वक दाहिनी ओर मे) बाईं ओर को (बंक=वक्र) गुरु के चिह्न ऽ रखते चले जावो तब तक कि जब तक सब लघु न आजावे। जब सब लघु आजावे तब उसी को उसका अंतिम भेद समझो। प्रत्येक भेद में इस बात का ध्यान रक्खो कि यदि वर्णिक प्रस्तार है तो उसके प्रत्येक भेद मे उतने ही उतने चिह्न आते जावें और मात्रिक प्रस्तार हो तो प्रत्येक भेद में उतनीही उतनी (कल) मात्राओं के चिन्ह आते जावें, न्यूनाधिक नहीं। मात्रिक प्रस्तार मे यदि बाईं ओर गुरु रखने से एक मात्रा बढ़ती हो तो लघु का ही चिन्ह रक्खो। वर्णिक प्रस्तार में पहला भेद सदैव गुरुओं का रहता है। मात्रिक प्रस्तार के समकल में पहला भेद सदैव गुरुओं का रहेगा और विषम कलों में पहला भेद सदैव लघु से प्रारम्भ होगा। यथा—

३ वर्ण का-पहला भेद-वर्णिक SSS
४ वर्ण का पहला भेद—वर्णिक SSSS
५ मात्राका-पहला भेद—मात्रिक ISS विषम कल
६ मात्राका-पहला भेद—मात्रिक SSS सम कल।

वर्णिक प्रस्तार ३ वर्ण

म	SSS
य	ISS
र	SIS
स	IIS
त	SSI
ज	ISI
भ	SII
न	III

वर्णिक प्रस्तार ४ वर्ण	
१	SSSS
२	ISSS
३	SISS
४	IISS
५	SSIS
६	ISIS
७	SIIS
८	IIIS
९	SSSI
१०	ISSI
११	SISI
१२	IISI
१३	SSII
१४	ISII
१५	SIII
१६	IIII

मात्रिक विषमकल प्रस्तार ५ मात्रा	
१	ISS
२	SIS
३	IIIS
४	SSI
५	IISI
६	ISII
७	SIII
८	IIIII

मात्रिक समकल प्रस्तार ६ मात्रा	
१	SSS
२	IISS
३	ISIS
४	SIIS
५	IIIIS
६	ISSI
७	SISI
८	IIISI
९	SSII
१०	IISII
११	ISIII
१२	SIIII
१३	IIIIII

३ नष्ट

(नष्टहु पूछे भेद को रूप रचै ततकाल)

अंक प्रश्न हरि छंदनि अंक,
नष्ट शेष सम करिये बंक।
सूची अरध, बरन कल पूर,
गुरु नंतर कर कल इक दूर ॥

टीका—वर्णिक नष्ट में सूची के आधे आधे अंक स्थापित करो और मात्रा नष्ट में पूरे पूरे अंक स्थापित करो। छंद के पूर्णांक

से प्रश्नांक घटाओ। जो शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओर से बाईं ओर के जो जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो। मात्रिक में जहां जहां गुरु बने उनके आगे की एक एक मात्रा मिटा दो। यथा—

वर्णिक नष्ट

प्रश्न–बताओ, ४ वर्णों में १०वां रूप कैसा होगा?

रीति–पूर्णांक ८×२=१६ में से १० घटाये, ६ रहे। ६ में ४ और २ ही घट सकते हैं। इसलिये इन दोनों को गुरु कर दिया। यथा—

अर्ध सूची	१	२	४	८	पूर्णांक
साधारण चिन्ह	।	।	।	।	१६
(उत्तर)	।	S	S	।	

यही १०वां भेद हुआ।

मात्रिक नष्ट।

प्रश्न–बताओ, ६ मात्राओं में ७वां भेद कैसा होगा?

रीति–पूर्णांक १३ मेंसे ७ घटाओ, शेष ६ रहे। ६ में ५ और १ ही घट सकते हैं। अतएव इन दोनों को गुरु कर दिया और उनके आगे की एक एक मात्रा मिटा दी यथा—

पूर्ण सूची	१	२	३	५	८	१३
साधारण चिन्ह	।	।	।	।	।	।
(उत्तर)	S	.	।	S		।

यही ७वां भेद सिद्ध हुआ ऽ।ऽ।

४ उद्दिष्ट।

(कहु उदिष्ट रचि रुप की संख्या भेद रसाल)

गुरु अंकनि हरि छंदनिअंक,
शेष रहे उदिष्ट निशंक।
बरन अरध, कल जहँ गुरु होय,
अंक सूचि सिर पगतल दोय॥

टीका–वार्णिक उद्दिष्ट में सूची के अंक आधे आधे स्थापित करो मात्रिक में जहां गुरु का चिह्न हो वहां ऊपर और नीचे

इससे यह विदित हुआ कि ८ मात्राओं के संपूर्ण छंद ३४ ही हो सकते है ३४ के नीचे १३० है, यही ८ मात्राओं के सम्पूर्ण छंदों की लघु मात्राओं का ज्ञापक है। १३० की बांई ओर ७१ है, यही ८ मात्राओं के संपूर्ण छंदों के गुरु मात्राओं का ज्ञापक है। ७१ दूने १४२ और १३० का योग २७२ हुए इसलिये. ८ मात्राओं के संपूर्ण छंदों मे २७२ कला हैं और १३० और ७१ मिल कर २०१ होते हैं इतने ही वर्ण जानो। ऐसे ही और भी जानिये ।

वर्ण पाताल ।

वर्ण पताल सरल चौ पांती ।
प्रथम अनुक्रम संख्या तांती ।
दूजे सूची तीजे आधे ।
आदि अंत लघु गुरुहू साधे ।
चौथे इक त्रय गुणन करौजू ।
गुरु लघु के सब भेद लहौजू ।
सविस्तार मर्कटि में पढ़िये ।
पिंगल मति लहि हरि गुण गइये ।

वर्ण संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८
सर्व संख्या	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
लघ्वादि लघ्वंत गुर्वादि गुर्वंत	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
सर्वगुरु सर्वलघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४

इस वर्ण पाताल से यह विदित हुआ कि ८ वर्ण के सब २५६ वृत्त हो सकते हैं। इनमें से १२८ ऐसे हैं जिनके आदि में लघु हैं और १२८ ही ऐसे होंगे जिनके अंत में लघु हैं। १२८ ऐसे होंगे जिनके आदि में गुरु है और १२८ ही ऐसे होंगे जिनके अंत में गुरु है। सब वृत्तों में मिलकर १०२४ गुरु और १०२४ ही लघु वर्ण होंगे। मर्कटि में ये सब भेद विस्तार सहित मिलते हैं।

६ मेरु।

(मेरु, खंड, विस्तार लग संख्या छंद लखाय)

मात्रा मेरु।

द्वै द्वै सम कोठा अंतन में अंक सु इक इक दीजे।
इक दो एक तीन इक चौ इमि बायें अंत लिखीजे।
शेष कोष्ठ में तिर्य्यक् गति सों द्वै द्वै अंक मिलावे।
सूने थल को या विधि भरिये मत्त मेरु ह्वै जावै।

मात्रा मेरु—१ से १० मात्राओं का

					१	१
				१	१	२
				२	१	३
			१	३	१	४
			३	४	१	५
		१	६	५	१	६
		४	१०	६	१	७
	१	१०	१५	७	१	८
	५	२०	२१	८	१	९
१	१५	३५	२८	९	१	१०
SSSSS	‖SSSS	‖‖SSS	‖‖‖SS	‖‖‖‖S	‖‖‖‖‖	

इस यंत्र से यह विदित हुआ कि १० मात्राओं के छंद में

१ छंद	५ गुरु का होगा ।
१५ छंद	४ गुरु और २ लघु के होंगे ।
३५ छंद	३ गुरु और ४ लघु के होंगे ।
२८ छंद	२ गुरु और ६ लघु के होंगे ।
९ छंद	१ गुरु और ८ लघु के होंगे ।
१ छंद	सर्व लघु का होगा ।
कुल ८९	

पताका बनाने के लिये आदि ही में मेरु अंकों की आवश्यकता पड़ती है । विद्यार्थियों के लाभार्थ यहां १० मात्रा तक के मेरु अंक की कविता लिखते हैं । कंठस्थ कर लेने से परीक्षा में बड़ी सफलता होगी ।

मात्रा मेरु अंकावलि ।

प्रथम, एक दुइ, एकइ एका । (१) १
साधक माहि कवि करहि विवेका । (२) १, १
त्रै, दो इक, चौ, इक त्रय एका । (३) २, १
पंच, तीन चौ इक अभिषेका । (४) १, ३, १
षट, इक रितु सर पुनि इक राजै । (५) ३, ४, १
सतैं, चार दस षट इक साजै । (६) १, ६, ५, १
अठैं, एक दस तिथि मुनि एका । (७) ४, १०, ६, १
नव, सर नख इक्किस वसु एका । (८) १, १०, १५, ७, १
दस, शशि तिथि पैंतिस उडु, नव (९) ५, २०, २१, ८, १
एकहि भगवंत । मत्त मेरु के (१०) १, १५, ३५, २८, ९, १
अंक ये, गुनि राखहु गुनवंत ॥

वर्ण मेरु।

इच्छित कोठनि आदि अंत में एक एक लिखि आवै। दायें बायें पुनि इक द्वै त्रय चार आदि भरि जावै। शेष घरन में तिर्यक् गति सों द्वै द्वै अंक मिलावै। सिगरे कोठा या विधि साजै बरण मेरु ह्वै जावै॥

वर्ण मेरु १ से ८ वर्णों का

१	१							
१	२	१						
१	३	३	१					
१	४	६	४	१				
१	५	१०	१०	५	१			
१	६	१५	२०	१५	६	१		
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१	
१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१
८ गुरु का रूप	७ गुरु १ लघु के रूप	६ गुरु २ लघु के रूप	५ गुरु ३ लघु के रूप	४ गुरु ४ लघु के रूप	३ गुरु ५ लघु के रूप	२ गुरु ६ लघु के रूप	१ गुरु ७ लघु के रूप	सर्व लघु का रूप

दूसरी सरल रीति :—

तीन कोष्ठ को यंत्र बनाओ । नीचे सरल अंक लिखि जाओ । दूजे उलटे क्रम स्वइ लिखिये । आदिहिं इक घर बाहिर रखिये । तिर्य्यक् गति गुणि पहिले दूजै । भाजि तीसरे आदिहि पूजै । वरण मेरु सुंदर बनि जावै । जाके लखे मोद अति पावै ।

१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१
	८	७	६	५	४	३	२	१
	१	२	३	४	५	६	७	८

$$\frac{१ \times ८}{१} = ८,\ \frac{८ \times ७}{२} = २८,\ \frac{२८ \times ६}{३} = ५६,\ \frac{५६ \times ५}{४} = ७०$$

$$\frac{७० \times ४}{५} = ५६,\ \frac{५६ \times ३}{६} = २८,\ \frac{२८ \times २}{७} = ८,\ \frac{८ \times १}{८} = १$$

पताका बनाने के लिये आदिही में मेरु के अंकों की आवश्यकता पड़ती है । विद्यार्थियों के लाभार्थ यहां १ से ८ वर्ण तक मेरु अंक की कविता लिखते हैं । कंठस्थ कर लेने से परीक्षा में बहुत सफलता होगी ।

वर्ण मेरु अंकावलि ।

वर्णमेरु आद्यंत में इक इक अंक निसंक।

मध्य अंक सह आठ लग लिखत यहां
सब अंक ॥१॥

	(१) १, १
एक वर्ण इक इक धरौ, दूजे इक दो एक ।	(२) १, २, १
तृतिय मध्य त्रै त्रै धरौ, दुहू ओर पुनि एक ॥२॥	(३) १, ३, ३, १
चौथे षट धरि मध्यमे, एक चार दुहूं ओर।	(४) १, ४, ६, ४, १
पंचवें दस दस मध्य में, इक पच देत बहार ॥३॥	(५) १, ५, १०, १०, ५, १
छटें बीस करि मध्य मे, इक ऋतु तिथि पुनि सोय।	(६) १, ६, १५, २०, १५, ६, १
सतैं मध्य पैतिस जुगुल, इक मुनि इक्किस होय ॥४॥	(७) १, ७, २१, ३५, ३५, २१, ७, १
अष्टम सत्तर मध्य दै शशि बसु तारक भोग ।	(८) १, ८, २८, ५६, ७०, ५६, २८, ८, १

दांये बांये क्रम स्वई, वर्ण मेरु
सजोग ॥५॥

७ खंड मेरु ।

(उलटो क्रमहीं मेरु को, खंड मेरु, फल एक
एक कोष्ठ धरिये अधिक, आदिहिं एकहिं एक)

६ मात्राओ का खंड मेरु

१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	४	५		
१	३	६				
१						

६ वर्णों का खंडमेरु

१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	४	५	६	
१	३	६	१०	१५		
१	४	१०	२०			
१	५	१५				
१	६					
१						

सूचना—तिर्य्यक् गति से शेष अंकों की पूर्ति कर लो ।
फल मेरु सदृश ही है ।

---

८ पताका ।

(गजहु पताका गुरुन के छंद भेद अलगाय)

१ प्रथम मेरु के अंक सुधारो ।
उतनइ कोष्ठ अधः लिखि डारो ।
दूजे घर लिख सूची अंकनि ।
बरन अरध मत्ता भर पूरनि ॥

२ सम कल अलग सूचि को प्रथमा ।
विषम कलनि सब सिर पग तलमा ।

नीचे तें ऊपर को चलिये ।
क्रम तें सकल भेद तब लहिये ॥
३ अंत अंक तें इक इक अंका ।
हरि लिख प्रथम पंक्ति निरसंका ।
द्वै द्वै दूजे त्रय त्रय तीजे ।
इमि हरि शेष अंक भरि लीजे ॥
४ पिंगल रीति अनेक प्रकारा ।
सुगमहिं को इत कियो विचारा ।
आयो अंकन पुनि कहुं आवै ।
भानु पताका सहज लखावै ॥

१ मात्रा की पताका

१
१

२ मात्रा की पताका

१	१
१	१

३ मात्रा की पताका

२	१
१	३
२	

४ मात्रा की पताका

१	३	१
१	२	५
	३	
	४	

५ मात्रा की पताका

३	४	१
१	३	८
२	५	
४	६	
	७	

६ मात्रा की पताका

१	६	५	१
१	२	५	१३
	३	८	
	४	१०	
	६	११	
	७	१२	
	९		

७ मात्रा की पताका

४	१०	६	१
१	३	८	२१
२	५	१३	
४	६	१६	
९	७	१८	
	१०	१९	
	११	२०	
	१२		
	१४		
	१५		
	१७		

८ मात्रा की पताका

१	१०	१५	७	१
१	२	५	१३	३४
	३	८	२१	
	४	१०	२६	
	६	११	२९	
	७	१२	३१	
	९	१६	३२	
	१४	१८	३३	
	१५	१९		
	१७	२०		
	२२	२३		
		२४		
		२५		
		२७		
		२८		
		३०		

यहां ८ मात्रा के पताका की रीति लिखते हैं।

पहली पंक्ति १३ वाली ७ कोष्ठ
३४–१=३३
३४–२=३२
३४–३=३१
३४–५=२९
३४–८=२६

सू०–दायें से बायें तरफ की पहिली पंक्ति भरना प्रारम्भ करो। कोष्ठों को नीचे से ऊपर को भरते जाओ। जैसे ३३, ३२, ३१ इत्यादि। इस पहली पंक्ति में एक एक ही अंक घटित होता है। इतने ही स्थान एक एक गुरु के हैं।

दूसरी पंक्ति ५ वाली
१५ कोष्ठ

३४–३,१=३०
३४–५,१=२८
३४–५,२=२७
३४–८,१=२५
३४–८,२=२४
३४–८,३=२३
३४–१३,१=२०
३४–१३,२=१९
३४–१३,३=१८
३४–१३,५=१६
३४–२१,१=१२
३४–२१,२=११
३४–२१,३=१०

यह दूसरी पंक्ति हुई। कोष्ठों में नीचे से ऊपर को अंक भरते जाओ, जैसे ३० २८, २७ इत्यादि। इस दूसरी पंक्ति में दो दो अंक घटित होते हैं। इतने ही स्थान दो दो गुरु के हैं।

तीसरी पंक्ति २ वाली
१० कोष्ठ

३४–८,३,१=२२
३४–१३,३,१=१७
३४–१३,५,१=१५
३४–१३,५,२=१४
३४–२१,३,१=९
३४–२१,५,१=७
३४–२१,५,२=६
३४–२१,८,१=४

यह तीसरी पंक्ति हुई। कोष्ठों में नीचे से ऊपर को अंक भरते जाओ। जैसे २२, १७, १५ इत्यादि। इस तीसरी पंक्ति में तीन तीन अंक घटते हैं। इतने ही स्थान तीन तीन गुरु के हैं।

पहला भेद १ सर्व्व गुरु का है और ३४वां भेद सर्व्व लघु का है।

वर्णी पताका १ से ५ वर्णों की

१ वर्णों की पताका

१	१
१	२

२ वर्णों की पताका

१	२	१
१	२	४
	३	

३ वर्णों की पताका

१	३	३	१
१	२	४	८
	३	६	
	५	७	

४ वर्णों की पताका

१	४	६	४	१
१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

यहां ५ वर्णों के पताका की रीति लिखते है। जो अंक रीत्यनुसार प्राप्त होते जांय उन्हें नीचे कोष्ठ से ऊपर की ओर भर चालिये।

दायेसे बाईं ओर की पहिली पंक्ति—

१६ के सूची की (५ कोष्ठ)

१ गुरु के स्थान

३२–१=३१
३२–२=३०
३२–४=२८
३२–८=२४

दूसरी पंक्ति—

८ के सूची की (१० कोष्ठ)

२ गुरु के स्थान

३२–१, २ = २९
३२–१, ४ = २७
३२–२, ४ = २६
३२–१, ८ = २३
३२–२, ८ = २२
३२–४, ८ = २०
३२–१, १६ = १५
३२–२, १६ = १४
३२–४, १६ = १२

तीसरी पंक्ति—

४ के सूची की (१० कोष्ठ)

३२—१, २, ४ = २५
३२—१, २, ८ = २१
३२—१, ४, ८ = १९
३२—२, ४, ८ = १८
३२—१, २, १६ = १३
३२—१, ४, १६ = ११
३२—२, ४, १६ = १०
३२—१, ८, १६ = ७
३२—२, ८, १६ = ६

३ गुरु के स्थान

५ वर्णों की पताका

१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

चौथी पंक्ति—

२ के सूची की (५ कोष्ठ)

३२—१, २, ४, ८ = १७
३२—१, २, ४, १६ = ९
३२—१, २, ८, १६ = ५
३२—१, ४, ८, १६ = ३
३२—२, ४, ८, १६ = २

४ गुरु के स्थान

पहला भेद सर्व्व गुरु का है और ३२वां भेद सर्व्व लघु का जानो ।

---

९ मर्कटी ।

(वर्ण कला लग[1] पिंडहूं मर्कटि देत दिखाय)

मात्रा मर्कटी ।

सत कोठावलि प्रथम क्रमावलि दूजे सूची दीजे ।
तीजे गुणन दुहुंन को भरिये सर्व कला लखि लीजे ॥

---

१ लग=लघु, गुरु,

चौथे सुन इक द्वै पुनि दूने हरि सिरंक गुरु जानो ।
अंकन स्वइ आदिहिं सो पंचम कोष्ठ साजि लघु मानो ॥
चौथे हत तीजे सों वरणनि छटे कोष्ठ मँह धारो ।
तृतिय अर्द्ध धरि सप्तम पिंडहिं मत्ता मर्कटि सारो ॥

१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कला
२	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	संख्या
३	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०	सर्वकला
४	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	गुरु
५	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	लघु
६	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५	वर्ण
७	½	२	४½	१०	२०	३९	७३½	१३६	२४७½	४६५	पिंड

वर्ण मर्कटी ।

वर्ण मर्कटी लिखि क्रम संख्या दूजे सूची धारै ।
द्वै के आधे तृतिय पंक्ति में आदि अंत गल[1] सारै ॥
चौथे इक द्वै गुण करि राखिये सर्व वर्ण गहि पावै ।
पंचम चौ के आधे प्यारे गुरु लघु भेद बतावै ॥
छटवें चार पांच को जोरो सर्व कला दरसावै ।
सप्तम में षट् के आधे धरि पिंड सकल लखि पावै ॥

१ गल=गुरु लघु ।

१	१	२	३	४	५	६	वर्ण संख्या
२	२	४	८	१६	३२	६४	वृत्तों की संख्या
३	१	२	४	८	१६	३२	गुर्वादि गुर्वंत लघ्वादि लघ्वंत
४	२	८	२४	६४	१६०	३८४	सर्व वर्ण
५	१	४	१२	३२	८०	१९२	गुरु लघु
६	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	सर्व कला
७	१½	६	१८	४८	१२०	२८८	पिंड

१० सूचिका।

(दशम भेद कोउ सूचिका बरणत हैं निज बुद्धि बल।
मर्कटि अंतर्गत स्वऊ संख्या लघु गुरु की सकल॥)

मत्त सूचिका सूची लिखिये। अंत ओर दो अंकहिं तजिये। बाम उपर, त्रय ऊपर नीचै। कोठा एक एक शुभ खींचै॥ इक तजि पुनि तत कोठा ठानो। आदि अंत लघु बिय सम जानो। आदि अंत गुरु लघु तिहि बांयें। आदि अंत गुरु पुनि तिहि बांयें॥

छः मात्राओं की सूचिका ।

			आदि गुरु अंत गुरु	आदि लघु अंत लघु	
१	२	३	५	८	१३
	आद्यंत गुरु		आद्यंत लघु		

एक और दो मात्राओं तक की सूचिका व्यर्थ है। तीन मात्रा और उससे अधिक की सूचिका नियमानुसार बन सकती है।

वर्ण सूचिका ।

वर्ण सूचिका अंत तजि द्वै द्वै कोठा बांय ।
आदि अंत लघु गुरु प्रथम वामाद्यंत लखायँ॥

४ वर्णों की सूचिका ।

	आद्यंत लघु	आदि लघु अंत लघु	
२	४	८	१६
	आद्यंत गुरु	आदि गुरु अंत गुरु	

एक वर्ण की सूचिका नहीं होती ।

सूची औ प्रस्तार पुनि, नष्ट और उद्दिष्ट ।
नव प्रत्यय में चारिही, भानु मते हैं इष्ट ॥

"शेष केवल कौतुकम्"

इति गणित विभागो वर्णनंनाम तृतीयोऽध्यायः ।

शुभमभूयात्
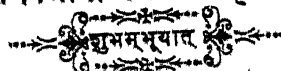
सूचीपत्र ।

साहित्याचार्य्य बाबू जगन्नाथप्रसाद भानु-कवि विरचित निम्न लिखित ग्रंथ और पुस्तकें इस यंत्रालय में मिल सक्ती हैं :—

१ काव्यप्रभाकर "भाषा साहित्य का अनूठा ग्रथ"... ५)

२. छंदप्रभाकर "भाषा पिंगल सटीक" .. १।।।)

३. शीतलामाता भजनावलि (छत्तीसगढी भाषा) ... १)

४. नवपंचामृत रामायण "लघु पिङ्गल सटीक" ... ।)

५. चतुर किसान (लेखक रामराव) ... ॥)

६ तुम्ही तो हो (अर्थात् कृष्णाष्टक और रामाष्टक)... –)

७ जयहरि चालीसी ... ... –)

८ कृषक-बाल-सखा (लेखक लोचनप्रसाद पाडेय) ... ।)

९. गुलजारे सखुन (उर्दू) ... १॥)
नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से प्राप्य

गुलजारे फ़ैज (उर्दू) ... .. ॥)

नोट:—पुस्तक विक्रेताओं को ये ग्रथ सस्ते दर से दिये जावेंगे । पत्रव्यवहार से कमीशन का ठहराव कर लेवे ।

पता:—

बाबू जगन्नाथ प्रसाद,
जगन्नाथ प्रेस बिलासपुर, सी. पी.

लेट गया।

अमर चुप हो गया। सब कुछ अचानक बड़ा उदास और सूना-सूना हो आया था। टण्डन की बात को उसने कतई गम्भीरता से नहीं लिया। कभी-कभी आदमी का मन होता है कि वह घोर निराशा-भरी बातें करे···वैराग्य और खानाबदोशी की बातें करे, तब सभी कुछ बड़ा निराशा और उदासी से भरा-भरा लगने लगता है। लेकिन स्वयं उसको अपने भीतर यह उदासी और व्यर्थता एक स्थायी और चिरन्तन तत्त्व जैसी लगती है···वही हर समय बनी रहनेवाली मनःस्थिति है···बाकी जो कुछ आता है—वह तो केवल धुएं के बादलों की तरह।

चारों ओर बत्तियां थीं—बिल्डिंगों से चिपके नियॉन-साइन थे और बसों, स्कूटरों, कारों की मिली-जुली गुर्राहट थी···जैसे ये लोग किसी द्वीप में बैठे हों और चारों तरफ सागर गरज रहा हो···लहरों की बाढ़ एक पर एक गुजरती चली जाती हो। अमर ने पीछे हथेलियां टिकाकर पांव फला लिए। सामने ही बड़े-बड़े अक्षरों में रीगल, गेलॉर्ड और स्टैण्डर्ड के नाम चमक रहे थे। रीगल की 'ई' आज नहीं जल रही थी।···अनेक बार वह रंजना के साथ यहां आकर बैठा है। इन विज्ञापनों को कभी सम्पूर्ण ही नहीं पाया···कुछ न कुछ टूटा ही रहता है। और कुछ नहीं तो 'खादी ग्रामोद्योग' का 'ग्रा' ही शीर्षासन करने लगता है···। इस समय रंजना होती तब भी क्या ऐसे ही अवसाद की अनुभूति उसे होती रहती···? तब तो वे शायद यों दूर-दूर थोड़े ही बैठे होते जैसे टण्डन अलग लेटा है···? निश्चित रूप से दोनों सटकर एक धुंधलके के झागदार आवरणों में खोए रहते। वह शायद उसकी उंगलियों या वेणी से खेलता रहता···और बीच की पगडण्डी से गुजरनेवाले अंधेरे में नजर गाड़-गाड़कर उन्हें देखते जा रहे होते—और उस सारे सम्मोहन और स्वप्न के वातावरण से सहसा टूटकर गहरी सांस लेकर रंजना कहती, "अच्छा, अब चलें, हमें देर हो जाएगी···"

वह बिना किसी प्रसंग के ही कह उठता, "जानती हो, मेरे मने में कैसे घर में रहने का स्वप्न जागता है?—समुद्र के किनारे काली-काली बडी-सी चट्टान हो, उसपर एक छोटा-सा घर हो और उसकी सारी खिड़कियां, दरवाज़े समुद्र की ओर खुलते हों···मेरा एक छोटा-सा कुत्ता हो और मैं रोज़ सुबह-शाम लहरों को छूता हुआ उसके साथ किनारे-किनारे दूर तक घूमने जाया करूं···।" वह 'दूर' को खींचकर कहता।